एक कहानी कई रंग–16 ः

शेर और आदमी जैसी कहानियॉ

संकलन और अनुवाद

सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Sher Aur Aadmi JaIsi Kahaniyan (Lion and Man Like Stories)
Cover Page picture : A Lion in the Cage
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

एक कहानी कई रंग 5

शेर और आदमी जैसी कहानियॉ 7

1 शेर और आदमी 9

2 शिकारी और शेर 16

3 हमेशा के लिये गया पेड़ 23

4 शैतान चीता 29

5 एक चीता, एक ब्राह्मण और एक गीदड़ 37

6 ब्राह्मण, मगर और लोमड़ा 44

7 आदमी और सॉप 48

8 एक गोरा और एक सॉपिन 53

9 एक यात्री का कारनामा 56

10 आदमी सॉप और लोमड़ी 65

11 कृतघ्न 68

12 ब्राह्मण चीता और छह जज 71

13 बन्दर का न्याय 79

14 आदमी और सॉप 83

15 बन्दर और अनन्सी मकड़ा 88

15 चीते की गुरू 91

17 चूहे ने बन्दर की पूँछ बचायी 96

एक कहानी कई रंग

लोक कथाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए कुछ समय पहले हमने संसार के सब देशों से कुछ लोक कथाऐं संकलित की थीं। उनको हमने "देश विदेश की लोक कथाऐं" सीरीज़ में प्रकाशित किया था। वे कथाऐं जब काफी संख्या में इकट्ठी हो गयीं, करीब करीब **2500,** तो उनमें एक तस्वीर देखी गयी। वह थी कि उनमें से कुछ कहानियॉ एक सी थीं और आपस में बहुत मिलती जुलती थीं।

तो लोक कथाओं की एक और सीरीज़ शुरू की गयी और वह है "एक कहानी कई रंग"। कितना अच्छा लगता है जब एक ही कहानी के हमें कई रूप पढ़ने को मिलते हैं। इन पुस्तकों में कुछ इसी तरह की कहानियॉ दी गयी हैं। सबसे पहले इसमें सबसे ज़्यादा लोकप्रिय कहानी दी गयी है और उसके बाद ही उसके जैसी दूसरी कहानियॉ दी गयी हैं जो दूसरी जगहों पर पायी जाती हैं। हम यह दावा तो नहीं करते कि हम वैसी सारी कहानियॉ यहॉ दे रहे हैं पर हमारी कोशिश यही रहेगी कि हम वैसी ज़्यादा से ज़्यादा कहानियॉ एक जगह इकट्ठा कर दें।

इस सीरीज़ में बहुत सारी पुस्तकें हैं जो यह बताती हैं कि केवल **2–4** कहानियॉ ही ऐसी नहीं हैं जो सारे संसार में कई जगह पायी जाती हों बल्कि बहुत सारी कहानियॉ ऐसी हैं जो अपने अपने तरीके से भिन्न भिन्न जगहों पर कही सुनी जाती हैं। इनमें सिन्डरैला, टाम थम्ब, बिल्ला और चुहिया, सोती हुई सुन्दरी, छह हंस[1] आदि मशहूर कहानियॉ दी गयी हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॉ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में यह जानने की प्रेरणा भी देंगी कि एक ही तरह की कहानी किस तरह से दूसरे देशों में पहुँची। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

[1] Cinderella, Toma Thumb, Cat and Rat, Sleeping Beauty, Six Swans etc stories

शेर और आदमी जैसी कहानियॉ

बच्चों तुम लोगों ने उस शेर और आदमी की कहानी तो जरूर ही सुनी होगी जिसमें एक आदमी दया कर के एक भूखे शेर को पिंजरे में से आजाद कर देता है पर जब वह शेर उसको खाने के लिये कहता है तो आदमी घबरा जाता है और अपनी जान बचाने का उपाय ढूँढता है। क्या कहा नहीं सुनी? यह कैसे हो सकता है? यह कहानी तो उन कहानियों में से एक है जो माता पिता अपने बच्चों को ढाई तीन साल की उम्र से सुनाना शुरू करते हैं।

ठीक है। अगर सुनी है तो बहुत अच्छा है और अगर नहीं सुनी तो तुम्हारी बचपन में सुनी हुई बहुत ही महत्वपूर्ण कहानियों में से एक कहानी रह गयी। तो लो वह कमी आज हम इस कहानी को यहॉ प्रस्तुत कर के यहॉ पूरी कर देते हैं बल्कि तुम्हारे ज्ञान में और बढ़ोत्तरी करने के लिये वैसी ही कुछ कहानियॉ और भी दे रहे हैं। यह कहानी बच्चों को यह सिखाने के लिये सुनाते हैं कि अक्ल बड़ी होती है और अक्ल से बड़ी बड़ी मुश्किलों का आसानी से सामना किया जा सकता है। तुम देखोगे कि सारी कहानियों का अन्त करीब करीब एक सा है।

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं। बच्चों जैसे तुम लोग कहानियॉ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहॉ के बच्चे कहानियॉ सुनते हैं। क्योंकि कहानियॉ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियॉ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

इन पुस्तकों की पहली कहानी वह कहानी है जो बहुत लोकप्रिय कहानी है उसके बाद ही फिर उसकी जैसी और कहानियॉ दी गयी हैं। ऐसी कहानियॉ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे।

इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियॉ"[2]। अब तक इस सीरीज़ में **15** पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। इन सब पुस्तकों के नाम इस पुस्तक के पीछे दिये हुए हैं।

शेर और आदमी की कहानी बहुत पुरानी और एक बहुत ही लोकप्रिय कहानी है। छोटे बच्चों को बहुत पसन्द आती है यह कहानी। पर ऐसी कहानी केवल भारत में ही नहीं सुनायी जाती बल्कि और देशों में भी कही सुनी जाती है। अगर तुम्हारे पास ऐसी ही कोई और कहानी हो तो हमें जरूर लिखना हम उसको अपने अगले संस्करण में प्रकाशित करने की भरपूर कोशिश करेंगे।

सारी कहानियॉ लगभग एक सी ही हैं पर इन कहानियों में कुछ कहानियों में तो केवल एक ही आदमी या जानवर आदमी का फैसला कर देता है पर कुछ में उसको कई लोगों से सलाह लेनी पड़ती है। पर खुशकिस्मती से वह हर कहानी में जीत जाता है।

ये कथाऐं बहुत शिक्षाप्रद हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को सीख देने के अलावा तुम लोगों का भरपूर मनोरंजन भी करेंगी।

---

[2] "One Story Many Colors-1 – "Cat and Rat" Like Stories

1 शेर और आदमी[3]

यह कहानी मेरे बचपन की पहली पहली कहानियों में से एक है। और शायद यह सबसे पहली कहानी है जो मैंने तब सुनी थी जब हम अक्ल का मतलब भी नहीं समझते थे।

सच्चाई तो यह है कि अक्ल वाकई बहुत ही बड़ी और ताकतवर चीज़ होती है। वह ताकतवर से ताकतवर दुश्मन को भी हरा सकती है।

मगर इसके साथ एक परेशानी है वह यह कि यह बाजार में नहीं मिलती इसलिये इसको खरीदा नहीं जा सकता। पर विद्वानों का कहना है कि कोशिश करने से इसको बहुत ही थोड़ा सा बढ़ाया जा सकता है।

एक बार एक आदमी कहीं जा रहा था कि रास्ते में उसने शेर का एक पिंजरा रखा देखा। उसमें एक शेर बन्द था। वह पिंजरे में बेचैनी से इधर उधर घूम रहा था। वह आदमी उस शेर की मजबूरी को देख कर मुस्कुरा दिया।

असल में वह शेर कई दिनों से उस पिंजरे में बन्द था। दिन भर में जो भी उस रास्ते से गुजरता वह शेर उसी से प्रार्थना करता कि

[3] The Lion and the Man – a folktale from India. This folktale is very popular in India and is told to the very little children.

वह उसे उस पिंजरे में से निकाल दे पर कोई भी उसे इस डर से पिंजरे से बाहर नहीं निकालता था कि पिंजरे में से निकल कर वह उसी को खा जायेगा।

कई दिनों से पिंजरे में बन्द होने की वजह से वह भूखा भी बहुत था। सो हर बार की तरह से उसने इस आदमी से भी अपने आपको बाहर निकालने की प्रार्थना की।

यह आदमी बहुत दयालु था। शेर को भूख से तड़पता देख कर उसे उस शेर पर दया आ गयी। वह उसे निकालने ही वाला था कि उसको ध्यान आया कि शेर तो भूखा है निकलते ही उसे खा जायेगा।

इसलिये उसने शेर से कहा — "मगर शेर भाई, मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ। तुम तो पिंजरे में से निकलते ही मुझे खा जाओगे।"

शेर बोला — "नहीं भाई, मैं वायदा करता हूँ कि मैं तुमको बिल्कुल नहीं खाऊँगा। तुम तो मुझे इस मुसीबत से छुटकारा दिलाओगे फिर मैं तुम्हें कैसे खा सकता हूँ। मेहरबानी कर के बस तुम मुझे किसी तरह इस पिंजरे से बाहर निकाल दो।"

उस आदमी को अभी भी विश्वास नहीं आया कि शेर पिंजरे से बाहर निकलने के बाद उसे नहीं खायेगा, सो उसने एक बार फिर शेर से पूछा — "पक्का? तुम मुझे पिंजरे से बाहर निकलने के बाद नहीं खाओगे?"

शेर बोला — "पक्का वायदा आदमी भाई, मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं खाऊॅगा।"

यह सुन कर वह आदमी पिंजरे के ऊपर चढ़ा और उसका दरवाजा खोल दिया। शेर बहुत ही खुश हुआ। वह तुरन्त ही बाहर निकल आया और आज़ादी की एक ऑगड़ाई ली।

वह भूखा तो था ही उस आदमी से बोला — "भाई, मुझे बाहर निकालने के लिये तुमको बहुत बहुत धन्यवाद। पर मुझे बहुत भूख लगी है। यहॉ मुझे खाने के लिये और तो कुछ दिखाई नहीं देता जिसे मैं खा लूॅ इसलिये मैं तुमको ही खा कर अपना पेट भर लूॅगा।"

यह सुन कर तो वह आदमी बहुत घबराया और थर थर कॉपने लगा। उसने तो शेर के वायदे पर ही वह पिंजरा खोला था और शेर को आजाद किया था और वही शेर अब उसको खाना चाहता है।

सच है किसी के साथ भलाई करने का जमाना ही नहीं रह गया। पर अब वह क्या करे? अपनी जान कैसे बचाये? उसकी तो जान पर बन आयी थी।

उसने शेर को समझाने की बहुत कोशिश की कि उसने शेर को पिंजरे से बाहर निकाल कर उसके ऊपर कितना बड़ा एहसान किया है। कम से कम उसी एहसान के बदले में वह उसको बख्श दे। नहीं तो उसने जो उससे वायदा किया था उसी की लाज रख ले।

परन्तु शेर ने उसकी एक न सुनी। उसको तो भूख लगी थी वह तो बस उसको खाना चाहता था।

उस आदमी को पसीना आ गया। मौत उसकी ऑखों के सामने नाच रही थी। उसने चारों ओर देखा कि शायद उसे कोई सहायता के लिये मिल जाये पर उसे कहीं कोई दिखाई ही नहीं दे रहा था और उसको कोई और रास्ता नजर नहीं आ रहा था।

तभी उसको एक और आदमी उधर आता नजर आ गया। उस आदमी को कुछ आशा बॅधी कि शायद वह उसकी कुछ सहायता कर सके।

दूसरा आदमी जब पास आ गया तो उस दूसरे आदमी ने देखा कि एक आदमी एक शेर के पास खड़ा है और उसे कुछ समझाने की कोशिश कर रहा है।

दूसरा आदमी समझ गया कि जरूर ही दाल में कुछ काला है। वह पहले तो डरा फिर कुछ सोचता हुआ आगे बढ़ा और पहले आदमी से पूछा — "भाई, क्या बात है। तुम कुछ परेशान से नजर आ रहे हो। क्या मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकता हूॅ?"

पहले आदमी ने शुरू से आखीर तक उसे सारा किस्सा बता दिया। यह दूसरा आदमी कुछ अक्लमन्द था।

वह कुछ सोच कर पहले आदमी से बोला — "तुम इस पिंजरे पर चढ़ जाओ और जब मैं इशारा करूॅ तो इस पिंजरे का दरवाजा तुरन्त बन्द कर देना। तब तक मैं शेर से निपटता हूॅ।"

पहला आदमी तुरन्त पिंजरे के ऊपर चढ़ गया और दूसरे आदमी के इशारे का इन्तजार करने लगा।

इधर दूसरा आदमी शेर से बोला — "शेर जी, आपने सुना कि इस आदमी ने क्या कहानी बतायी? मैं इस आदमी की कहानी पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं करता।

इसी लिये मैंने इस आदमी को ऊपर भेज दिया। अब मैं यह कहानी आपके मुँह से सुनना चाहता हूँ। मुझे यकीन है कि आप मुझे यह कहानी ठीक से ही बतायेंगे।"

शेर को यह सुन कर बहुत अच्छा लगा कि आदमी आदमी पर विश्वास नहीं कर रहा था और वह उस कहानी को उससे सुनना चाह रहा था। तो शेर ने भी अपनी कहानी उस आदमी को सुना दी।

आदमी बोला — "शेर जी, वैसे यह आपकी यह बड़ी गलत बात है कि जिस आदमी ने आपको आजाद किया आप उसी को खाना चाहते हैं।"

शेर बोला — "आदमी भाई, मैं क्या करूँ। मैं कई दिनों का भूखा हूँ। उस समय मुझे उस आदमी के अलावा कोई और पिंजरे में से बाहर निकालने वाला दिखायी ही नहीं दे रहा था तो अपने को बाहर निकलवाने के लिये मैंने उससे उसको न खाने का वायदा कर लिया।

पर बाहर निकल कर मुझे और कोई चीज़ खाने के लिये दिखायी नहीं दी तो मैं उसी को ही खा रहा था। अब मुझे आप दिखायी दे गये है तो मैं आपको खा लेता हूँ।"

यह सुन कर तो दूसरा आदमी भी परेशान हो गया पर साहस के साथ बोला — "शेर जी, बाकी सब तो मेरी समझ में आ रहा है पर एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही कि आप कह रहे थे कि आप इस पिंजरे में बन्द थे।

पर आप जैसा ताकतवर जानवर इस पिंजरे में बन्द हुआ ही कैसे? मुझे बिल्कुल भी विश्वास नहीं होता कि आप जैसा ताकतवर शेर भी इस पिंजरे में बन्द हो सकता है। क्या आप मुझे इसमें बन्द हो कर दिखायेंगे कि आप इस पिंजरे में कैसे बन्द थे?"

शेर इस दूसरे आदमी को देख कर बहुत खुश था कि अब उस को दो दो आदमी खाने के लिये मिलेंगे। इस खुशी में वह यह भूल गया कि वह क्या करने जा रहा है।

वह तुरन्त ही पिंजरे में अन्दर जा कर खड़ा हो गया और बोला — "जनाब मैं यहॉ इस तरह बन्द था।"

जैसे ही वह शेर पिंजरे के अन्दर गया उस आदमी ने ऊपर वाले आदमी को इशारा कर दिया और उसने पिंजरे का दरवाजा नीचे गिरा दिया।

इस तरह शेर फिर से पिंजरे में बन्द हो गया और इस तरह दूसरे आदमी ने अपनी अक्लमन्दी से अपने दोनों आदमियों की जान बचायी।

बच्चों, जिन लोगों का स्वभाव जैसा होता है वे अपने स्वभाव के अनुसार ही काम करते हैं। इसलिये उनका स्वभाव जान कर ही उनकी बातों पर भरोसा करना चाहिये।

दूसरे, बेवकूफ लोग अपनी बेवकूफी से खुद भी मुश्किल में पड़ जाते हैं और दूसरों के लिये भी मुश्किल खड़ी कर देते हैं जैसा कि पहले आदमी ने किया।

जबकि अक्लमन्द लोग अपनी मुश्किलें भी हल कर लेते हैं और दूसरों को भी मुश्किलों से निकाल लाते हैं जैसा कि दूसरे आदमी ने किया।

2 शिकारी और शेर[4]

शेर और आदमी जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये पश्चिमी अफ्रीका के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से चुनी है। देखो बहॉ के बच्चे इस कथा को किस तरह से कहते सुनते हैं।

बहुत पहले की बात है कि एक देश के एक गॉव में एक शिकारी रहता था। एक दिन उसने अपना तीर कमान उठाया और जंगल में शिकार करने चला गया।

जंगल में उसने सारे दिन में एक हिरन और दो खरगोश मारे और वह अपने इस शिकार से बहुत खुश था। उसने हिरन अपनी गर्दन में लटका लिया और दोनों खरगोश अपनी कमर में बॉध लिये।

वह खुशी से सीटी बजाता चला जा रहा था और सोचता जा रहा था कि वह अपने शिकार को अपने लोगों में कैसे बॉटेगा कि तभी उसका ध्यान किसी की सहायता के लिये पुकारने की चीख ने खींच लिया।

उसको लगा कि वह चीख किसी शेर की थी। वह चौंक गया और डर भी गया। उसने सोचा — "शायद यह मेरे शिकार के पीछे होगा।"

---

[4] The Hunter and the Lion – a Yoruba folktale from Nigeria, West Africa. Adapted from the Book "The Orphan Girl and the Other Stories". by Offodile Buchi. 2001. Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com

वह जल्दी से चीख आने वाली दिशा की तरफ मुड़ा पर उसको ऐसा कुछ दिखायी नहीं दिया जिससे वह यह जान सके कि वह शेर किस तरह की सहायता के लिये चीख रहा था।

इतनी ही देर में वही चीख फिर सुनायी दी। इस बार वह समझ गया कि यह चीख किस तरफ से आयी थी। यह शेर था यह तो पक्का था पर कहॉ था यह उसको दिखायी नहीं दे रहा था।

उसने ऊपर नीचे देखा तो देखा कि एक शेर एक पेड़ की दो डालों के बीच से तकिये की तरह लटक रहा है।

शिकारी ने बड़ी नाउम्मीदी से अपना सिर हिलाया और बुदबुदाया — "जैसा कि मैंने सोचा था यह तो वही है।"

उसने अपना हिरन तो नीचे जमीन पर रखा और अपना तीर कमान उठाया। शेर को देखते हुए उसने अपना तीर कमान पर चढ़ाया और कमान की रस्सी धीरे से खींची।

उसको लगा कि शेर तो हिल भी नहीं रहा कि तभी शेर बोला — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो मैं यहॉ फॅस गया हूॅ।"

यह सुन कर शिकारी ने अपना तीर कमान नीचे कर लिया और बहुत ही सावधानी से उस पेड़ का चक्कर लगाया।

वह यह देखना चाहता था कि शेर उसके साथ कहीं कोई चाल तो नहीं खेल रहा पर उसको लगा कि नहीं वह चाल नहीं खेल रहा बल्कि वह सचमुच में ही फॅस गया है और दर्द में है।

शिकारी ने पूछा — "अरे तुम यहॉ कैसे आये? और यह सब तुम्हारे साथ किसने किया?"

शेर बोला — "पहले मुझे नीचे उतारो फिर मैं तुम्हें बताता हूॅ।"

शिकारी ने शेर को नीचे उतरने में सहायता की। उसने उसको फॅसने वाली जगह से निकाला और नीचे उतारा।

शेर बोला — "तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। यह उस बदमाश हाथी का काम है। उसी ने मुझे ऊपर फॅसा दिया था और मैं तीन दिन से यहीं लटका हुआ हूॅ।"

शिकारी बोला — "वह तो ठीक है पर अब तो तुम नीचे आ गये हो अब तुम जाओ। मुझे भी अपने परिवार के पास जाना है।"

अब जैसा कि तुमको मालूम है बच्चो, शेर उस पेड़ के ऊपर तीन दिन से फॅसा पड़ा था। बह भूखा था, थका हुआ था और प्यासा था सो उसने शिकारी से एक और चीज़ के लिये प्रार्थना की।

शेर बोला — "भाई तुमने मेरे ऊपर बड़ी दया की है पर केवल इससे मेरा क्या भला होगा अगर तुम मुझे यहॉ अकेला मरने के लिये छोड़ जाओ। अभी मैं कोई भी शिकार करने के लिये बहुत कमजोर हूॅ क्या तुम मुझे कुछ खाने को दोगे?"

शिकारी बोला — "मैं तुम्हारे लिये खाना कहॉ ढूॅढू?"

शेर बोला — "यह हिरन मेरे लिये काफी है। यह हिरन मुझे दे दो। मुझे तो तुम सच्चे दोस्त लगते हो जिसकी मैं अपनी किसी भी मुसीबत में सहायता ले सकता हूँ।

मेहरबानी कर के अभी तुम मेरी सहायता कर दो और जब मैं अपना शिकार करने के लिये थोड़ा ठीक हो जाऊँगा तब मैं तुम्हारी इस दया का बदला जरूर चुका दूँगा।"

शिकारी ने कुछ देर सोचा फिर अपने हिरन को दो हिस्सों में काटा और उसमें से एक हिस्सा शेर को दे दिया और बोला — "ठीक है, इसके लिये तुमको मुझे कुछ देने की जरूरत नहीं है। तुम इसे खाओ और जाओ। अब मैं चलता हूँ।"

शिकारी ने मुश्किल से अपनी बात खत्म की थी कि शेर ने अपने हिस्से का हिरन एक बार में ही निगल लिया और उससे और मॉस मॉगा। शिकारी ने हिरन का दूसरा हिस्सा भी उसको दे दिया।

शेर ने उसको भी तुरन्त ही खा लिया और फिर शिकारी की कमर में बॅधे हुए खरगोशों की तरफ देखते हुए खाने के लिये कुछ और मॉगा। बेचारे शिकारी ने वे दोनों खरगोश भी उसको दे दिये। उसने उनको भी खा लिया और फिर और खाना मॉगा।

शिकारी बोला — "पर अब तो मेरे पास कुछ भी नहीं है। जो कुछ मैंने आज पकड़ा था वह सब तो मैं तुमको दे चुका।"

शेर बोला — "पर मेरा तो अभी पेट नहीं भरा है। मुझे तीन दिन हो गये हैं खाना खाये हुए। मैं क्या करूँ।"

इस बीच शेर की निगाह शिकारी के कुत्ते की तरफ थी।

शिकारी बोला — "नहीं नहीं, मेरा कुत्ता नहीं।"

शेर बोला — "पर मेरा तो अभी पेट नहीं भरा। मुझे अभी और खाना चाहिये।"

शिकारी के पास और कोई चारा नहीं था सो उसने शेर को अपना कुत्ता भी खाने के लिये दे दिया।

कुत्ता खा कर शेर बोला — "मुझे अभी और खाना चाहिये।"

अब शिकारी और शेर दोनों आपस में बहस करने लगे।

शिकारी बोला — "तुम्हारे साथ भलाई करने का क्या यही फल है जो तुम मुझे अपनी जान बचाने के बदले में दे रहे हो? क्या भगवान मुझे तुम्हारे साथ भलाई करने के बदले में यही सजा दे रहा है?"

वे जब आपस में इस तरह की बातें कर ही रहे थे कि तभी उनको एक खरगोश आता दिखायी दिया।

खरगोश बोला — "लगता है यहॉ कुछ गड़बड़ है। क्या बात है तुम लोग आपस में क्या बहस कर रहे हो?"

जैसे शिकारी खरगोश का ही इन्तजार कर रहा हो और जैसे कि वह कोई जज हो शिकारी ने अपना मामला खरगोश के सामने रखा। फिर खरगोश शेर की तरफ देखता हुआ बोला कि वह भी अपनी कहानी बताये।

शेर बोला — "यह ठीक कह रहा है। पर मुझे अभी भी भूख लगी है और मुझे अभी और खाना चाहिये।"

खरगोश ने शेर से पूछा — "पर तुम वहाँ उस पेड़ पर फँसे कैसे?"

इस पर शेर ने उसको बताना शुरू किया कि वह उस पेड़ पर कैसे फँस गया था। पर खरगोश बोला कि उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

वह बोला — "जिस तरीके से तुम यह सब मुझे बता रहे हो न, यह सब बहुत ही गड़बड़ घोटाले वाला मामला है। यह कैसे हो सकता है कि तुम तीन दिन तक वहाँ उस पेड़ पर ही फँसे पड़े रहे?

क्योंकि अगर तुम झूठ बोल रहे होगे तो फिर मेरे पास इसके अलावा और कोई चारा नहीं है कि मैं शिकारी की तरफ अपना फैसला सुना दूँ।

मुझे यकीन है कि मैं इसे तब ज़्यादा अच्छी तरह समझ पाऊँगा और ज़्यादा अच्छी तरह से फैसला दे पाऊँगा अगर मैं तुमको उस जगह वैसे ही बैठा देख पाऊँ जैसे कि शिकारी ने तुमको वहाँ बैठे देखा था।"

फिर वह शिकारी की तरफ मुड़ा और उससे बोला कि वह शेर को वहीं रख दे जहाँ वह फँसा हुआ था और जहाँ उसने उसको देखा था ताकि वह देख सके कि वह कहाँ था।

सो शेर मरे जैसा पड़ गया। शिकारी ने उसे उठाया और फिर से उसे उन शाखों के बीच फॅसा दिया। शेर बड़े दर्द के साथ बोला — "मैं यहॉ ऐसे ही फॅसा हुआ था।"

खरगोश बोला — "तो फिर ओ शिकारी। ज़रा यह तो बताओ कि एक टिड्डा जिसको हौर्न बिल[5] ने मारा वह तो बहरा था पर तुम तो आदमी हो और शेर एक जानवर है। तुमने उसको बचाया ही क्यों?

तुमने तो उसे जो कुछ तुम्हारे पास तो वह सब कुछ दे दिया और फिर भी उसको और चाहिये – यानी कि तुम। मार दो इसको।"

यह सुन कर शिकारी ने शेर को मार दिया और उसको अपने घर खाने के लिये ले गया।

उस दिन के बाद उसने कसम खायी कि वह जैसे जैसे उसके सामने चीज़ें आती जायेंगी वैसे वैसे उनको लेता जायेगा और तब से वह हमेशा से ही वैसा करता आ रहा है खास कर के जब भी वह किसी शेर को देखता है।

[5] Hornbill – a kind of bird with bent beak. See its picture above.

3 हमेशा के लिये गया पेड़[6]

शेर और आदमी जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका महाद्वीप के बोट्सवाना देश की लोक कथाओं से ली है। देखने वाली बात यह कि कि छोटा सा खरगोश एक आदमी को शेर से खाने से कैसे बचाता है। आओ देखते हैं।

शेर चिल्लाया — "जल्दी भाग शेर, जल्दी भाग। तुझे बहुत ज्ल्दी जल्दी दौड़ना चाहिये। वे जंगली कुत्ते तो तेरे पीछे ही हैं।"

वे जंगली कुत्ते सारा दिन उस शेर का पीछा करते रहे थे – चट्टानों के ऊपर हो कर, नदियों में से हो कर, झाड़ियों के बीच में से हो कर, रास्ते पर चल कर।

बेचारे शेर को आराम करने का कहीं कोई मौका ही नहीं मिला। उसको ऐसा लग रहा था कि जैसे ही वह एक तरफ मुड़ता था वहॉ पर कुछ और कुत्ते उसका इन्तजार कर रहे होते थे।

पर आखिर उसने उन कुत्तों से बचने के लिये कुछ समय निकाल ही लिया। किस्मत से उसने उसी समय एक आदमी को एक बड़े से पेड़ के नीचे बैठा देखा।

[6] The Gone Forever Tree - a folktale from Botswana, Africa. Adapted from the Web Site : http://folktales.phillipmartin.info/home_gone_forever01.htm
Collected and retold by Phillip Martin

डरे हुए शेर ने आदमी से प्रार्थना की — "जनाब, क्या आप मेरी कुछ सहायता कर सकते हैं? ये जंगली कुत्ते सुबह से मेरा पीछा करते चले आ रहे हैं। मैं इनसे बचने के लिये भागते भागते इतना थक गया हूँ कि अब एक कदम भी और आगे नहीं जा सकता।"

आदमी बोला — "तुम जल्दी से इस पेड़ के पीछे छिप जाओ। मैं कुत्तों को दूसरी तरफ भेज दूँगा। जल्दी करो मुझे उनके पैरों की आवाज सुनायी पड़ रही है। वे बस आते ही होंगे।"

जैसे ही शेर पेड़ के पीछे छिपा सामने की झाड़ियों में से कुत्तों का एक झुंड निकल कर आदमी की तरफ बढ़ा।

उसमें से एक कुत्ते ने आदमी से पूछा — "क्या तुमने किसी शेर को यहॉ से जाते हुए देखा है?"

आदमी बोला — "हॉ देखा तो है। वह उधर पहाड़ी की तरफ भाग गया है। अगर तुम जल्दी से उधर भाग कर जाओगे तो मुझे यकीन है कि तुम उसको जरूर है पकड़ लोगे। वह बहुत थका हुआ लगता था।"

कुत्ते चिल्लाये — "बहुत बहुत धन्यवाद।" और तुरन्त ही पहाड़ी की तरफ भाग गये।

आदमी अपने मन में हॅसते हुए बोला — "मुझे तुम्हारी सहायता कर के बड़ी खुशी हुई।"

जब शेर ने देखा कि कुत्तों का झुंड उसके रास्ते से हट गया है तो वह बहुत खुश हुआ और उसके अन्दर एक नयी हिम्मत आ गयी।

वह पेड़ के पीछे से निकल आया और अपने पंजों में उस आदमी को जकड़ लिया।

आदमी चिल्लाया — "अरे यह तुम क्या कर रहे हो?"

शेर बोला — "यह तो साफ दिखायी दे रहा है कि मैं तुमको खाऊँगा।"

आदमी बोला — "पर अभी अभी तो मैंने तुम्हारी जान बचायी है।"

शेर बोला — "इसके लिये मैं तुम्हारी बहुत तारीफ करता हूँ। पर मैं भूखा भी बहुत हूँ और मैं अब इतना थक गया हूँ कि मैं अपना खाना ढूँढने कहीं और नहीं जा सकता। और फिर मैं कहीं और जाऊँ भी क्यों? तुम जो मेरे सामने हो।"

आदमी गिड़गिड़ाया — "मगर तुम मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकते।"

शेर चिंघाड़ा — "क्यों नहीं कर सकता। हॉ मैं ऐसा कर सकता हूँ और मैं ऐसा ही करूँगा।"

उसी समय एक बड़ा खरगोश[7] सामने से आता दिखायी दिया। उसने उन दोनों को आपस में बहस करते देखा तो पूछा — "क्या बात है, तुम लोग आपस में क्यों लड़ रहे हो?"

आदमी ने जितनी जल्दी हो सकता था सब कुछ उस बड़े खरगोश को बता दिया।

बड़ा खरगोश मुस्कुराया और बोला — "अगर तुम लोगों को मेरे ऊपर भरोसा हो तो मैं जानता हूॅ कि इस समस्या को कैसे सुलझाना है।

ओ आदमी, इस समस्या को सुलझाने के लिये मुझे "हमेशा के लिये गया पेड़"[8] की एक डंडी चाहिये। क्या तुम मुझे उस पेड़ की एक डंडी ला कर दे सकते हो?"

आदमी यह सुन कर वह डंडी लाने के लिये एक झाड़ी की तरफ चला गया पर उसने इस पेड़ का नाम तो पहले कभी सुना नहीं था सो वह मोफेन के पेड़ की एक डंडी ले कर आ गया।

उस डंडी को देख कर बड़ा खरगोश चिल्लाया — "नहीं नहीं यह नहीं। ओ आदमी, यह वह नहीं है जो मैं चाहता हूॅ। मेरा

[7] Translated for Hare - Hare is different from Rabbit in size and look. Hare is not a domestic animal and live on the ground as opposed to Rabbit who is a domestic animal and lives in burrows – see its picture above.

[8] Gone Forever Tree – in fact he wanted to say that when he goes from here he should "go forever" from there.

मतलब उसी से था जो मैंने तुमसे कहा था – "हमेशा के लिये गया पेड़" की डंडी।"

वह आदमी बड़े खरगोश के लिये वह डंडी लाने के लिये एक बार फिर झाड़ियों की तरफ चला गया पर अभी भी उसने उस पेड़ के बारे न कुछ सुना था और न कभी उसे देखा था। सो अबकी बार वह एक मोकगालो पेड़ की एक डंडी ले आया।

इस बार खरगोश उस आदमी के ऊपर बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "तुम मेरी बात ही नहीं सुन रहे हो ओ आदमी। मुझे "हमेशा के लिये गया पेड़" की एक डंडी चाहिये।

और अबकी बार अगर तुमको उस पेड़ की डंडी न मिले तो "कभी वापस न आओ पेड़"[9] की डंडी भी काम करेगी।"

एक बार फिर से वह आदमी डंडी लाने के लिये झाड़ियों की तरफ बढ़ा।

उस आदमी के जाते ही बड़ा खरगोश शेर से बोला — "यह बेवकूफ आदमी तो सादी सी बात भी नहीं समझता जैसे कि हम और तुम समझते हैं। अगर तुमको कोई ऐतराज न हो तो मैं उसके साथ जा कर उसको वह पेड़ दिखा आऊॅ?"

शेर बोला — "नहीं नहीं मुझे कोई ऐतराज नहीं है। मैं भी तुम्हारे साथ चला चलता पर मैं बहुत थका हुआ हूॅ।"

[9] Never Come Back Tree – in fact he wanted ro say that when you go from here "never come back".

"कोई बात नहीं तुम यहीं आराम करो मैं उसको वह पेड़ दिखा कर अभी आता हूँ।" सो वह बड़ा खरगोश भी आदमी के पीछे पीछे उसको वह पेड़ दिखाने के लिये चल दिया।

शेर वहीं उस पेड़ के नीचे खड़ा खड़ा दोनों का इन्तजार करता रहा पर वे तो दोनों तो जो एक बार गये सो लौटे ही नहीं। वे तो हमेशा के लिये चले गये थे।

इस तरह बड़े खरगोश ने शेर से उस आदमी की और अपनी जान बचायी।

4 शैतान चीता[10]

हर देश में मॉऐं दादियॉ और नानियॉ छोटे बच्चों को कहानियॉ सुनाया करती है बंगला देश भी इसका कोई अपवाद नहीं है। यह कहानी बंगला देश में कही सुनी जाती है।

एक बार पास के एक देश में एक बहुत ही प्रसिद्ध राजा रहता था। उसके भी प्रसिद्ध होने का एक कारण था और वह थे उसके अजीबोगरीब शौक। उसका एक अजीबोगरीब शौक था अजीब अजीब जानवरों को इकट्ठा करने और उनको पालने का शौक पर एक दिन उसको एक नया शौक लगा कि वह इन जानवरों से बात करे।

सो उसने अपने राज्य के मन्त्री को बुलवाया और उससे कहा — "संसार के सबसे बुद्धिमान व्यक्तियों को बुलाओ। मैं चाहता हूॅ कि ये जानवर बात करें।"

मन्त्री तो यह सुन कर डर के मारे कॉप गया फिर भी बोला — "महाराज यह काम कैसे सम्भव है?"

पर राजा ने उसके डर की ओर ध्यान न देते हुए कहा — "मुझे तुम्हारे सन्देह और डर नहीं सुनने बस तुम सब बुद्धिमान लोगों को बुलाओ।"

---

[10] Naughty Tiger – a folktale from Bangla Desh, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.aobbangladesh.org/node/178

बेचारे मन्त्री ने दूर और पास सभी देशों में देश के दूत भेजे। राजा का सन्देश सुन कर 10 ऐसे बुद्धिमान लोग राज्य में आ पहुॅचे। काफी कड़ी ट्रेनिंग के बाद वे पॉच जानवरों को बात करना सिखा सके।

राजा तो यह देख कर बहुत ही खुश हो गया। उसने उन लोगों को भरपूर इनाम दिया और फिर संसार के दूसरे देशों के राजाओं को अपना यह नया काम देखने के लिये बुलाया।

जब यह सब अवसर मनाया जा रहा था तो राजा ने एक चीते को सोने के पिंजरे में बन्द कर के अपने महल के दरवाजे पर खड़ा कर दिया।

अब जो भी महल में आता चीता उसे नमस्ते करता और कहता — "मेहरबानी कर के इस पिंजरे का दरवाजा थोड़ा सा खोल दीजिये।"।

आने वाले लोग यह सुन कर आश्चर्य तो प्रगट करते पर डर के मारे उसका दरवाजा खोलने का साहस कोई नहीं करता। तभी वहॉ सीधासादा एक ब्राह्मण भी आया। वह वास्तव में एक बहुत ही भला आदमी था।

जैसे जैसे वह सड़क पर चलता चला आ रहा था चीते ने उसका भी स्वागत किया और उसको कई बार सिर झुका कर नमस्ते की। वह जब उसके पास आ गया तो उसने उससे भी वही प्रार्थना की जो वह सबसे करता आ रहा था — "मेहरबानी कर के इस पिंजरे का

दरवाजा थोड़ा सा खोल दीजिये। मैं यहॉ इस पिंजरे में कई दिनों से बन्द हूॅ। मैं थोड़ी देर बाहर मैदान में घूमना चाहता हूॅ।"।

अब क्योंकि ब्राह्मण एक बहुत ही भला व्यक्ति था उसने सोचा कि शायद यह चीता बेचारा इस पिंजरे में काफी देर से बन्द होगा सो उसने उसके पिंजरे का दरवाजा खोल दिया।

जैसे ही चीते के पिंजरे का दरवाजा खुला वह उसमें से कूद कर बाहर आ गया और एक ॲगड़ाई ले कर ब्राह्मण को बहुत झुक कर प्रणाम किया और दहाड़ कर बोला — "अब ब्राह्मण देवता मैं आपको खाऊॅगा।"

ब्राह्मण तो यह सुन कर सकते में आ गया वह बोला — "यह तुम क्या कह रहे हो। मैंने तो तुम्हारे ऊपर दया की है और तुम्हें पिंजरे से बाहर निकाला है और फिर भी तुम कह रहे हो कि तुम मुझे खाना चाहते हो। तुम्हारा यह व्यवहार तो मेरे साथ ठीक नहीं है।"

चीता बोला — "ऐसा क्यों? सारे लोग इसी तरह से व्यवहार करते हैं।"

ब्राह्मण बोला — "नहीं नहीं। असम्भव। ऐसा नहीं हो सकता। तुम दो लोगों से पूछ कर देख लो कि वे क्या कहते हैं।"

चीता राजी हो गया और बोला — "यदि दो लोग आपसे राजी हो गये तो मैं आपको छोड़ दूॅगा पर यदि वे मेरी ओर से बोले तो मैं आपको निश्चित रूप से खा जाऊॅगा।"

ब्राह्मण और चीता दोनों मैदान में चल दिये। वहॉ एक बड़ा सा बरगद का पेड़ खड़ा हुआ था। ब्राह्मण उसको देख कर बोला — "यह मेरा पहला गवाह होगा।"

चीता बोला — "ठीक है आप पहले पेड़ से पूछें।"

ब्राह्मण ने बरगद के पेड़ से पूछा — "बरगद भाई यदि मैं किसी का भला करूँ तो क्या उसे मुझे नुकसान पहुँचाना चाहिये।"

बरगद ने एक लम्बी सी सॉस भरते हुए कहा — "कभी कभी ऐसा भी होता है बाबा। अब मुझे ही देख लो। इस मैदान में मैं एक अकेला पेड़ खड़ा हूँ। जब कड़ी धूप पड़ती है तो मैं लोगों को छाया देता हूँ। गर्मी में उनको ठंडक देता हूँ।

पर बदले में मुझे क्या मिलता है। अपनी गायों और बकरियों के खाने के लिये वे मेरी शाखें काट लेते हैं और मेरी पत्तियॉ चुरा लेते हैं।'

यह सुन कर चीते ने हॅस कर अपने होठ चाटे और बोला — "बाबा आपने अपने गवाह की बात सुनी?"

ब्राह्मण बोला — "पर अभी तो मेरा एक गवाह और बचा है।" तभी पेड़ पर बैठा एक चिड़ा बोल पड़ा।

चीता बोला — "इस गवाह से पूछो।"

ब्राह्मण ने सिर ऊपर उठा कर चिड़े से पूछा — "चिड़े भाई यदि मैं किसी का भला करूँ तो क्या उसे मुझे नुकसान पहुँचाना चाहिये।"

चिड़े ने हॉ में अपना सिर हिलाया — "हॉ बाबा कभी कभी ऐसा भी होता है। मुझे ही देख लो। मैं लोगों को खुश करने के लिये यहॉ बैठा बैठा सारा दिन मीठे मीठे गाने गाता रहता हूॅ। जब वर्षा समाप्त हो जाती है तो बहुत सारे कीड़े खा जाता हूॅ। इसके अलावा मैं लोगों को और भी कई मुश्किलों से बचाता हूॅ फिर भी वे मुझे मार देते हैं।"

चीता बोला — "बाबा सुना आपने?"

ब्राह्मण अब सोच में पड़ गया पर उसने आस नहीं छोड़ी वह बोला — "अच्छा मुझे एक मौका और दो। मैं एक और गवाह से पूछ लूॅ। बस आखिरी बार।"

चीते को अपने ऊपर पूरा विश्वास था सो उसने ब्राह्मण को एक और मौका दे दिया — "ठीक है बाबा पर यह आपका आखिरी मौका है बस इसके बाद और नहीं।"

तभी एक गीदड़ वहॉ घूमता घूमता आ गया। ब्राह्मण तुरन्त ही उसकी ओर बढ़ा और बोला — "यह आ गया मेरा आखिरी गवाह।"

वह चाचा गीदड़ की ओर बढ़ा और उससे पूछा — "चाचा गीदड़ यदि मैं किसी का भला करूॅ तो क्या उसे मुझे कोई नुकसान पहुॅचाना चाहिये।"

गीदड़ ने अपनी ऑखों में प्रश्न लिये ब्राह्मण की ओर देखा और पूछा — "क्या बात है बाबा। ज़रा साफ साफ कहो। मुझे ज़रा

खोल कर बताओ कि तुम मुझसे क्या पूछना चाहते हो। यदि तुम मुझे खोल कर नहीं बताओगे तो मैं समझ नहीं पाऊँगा।"

तब ब्राह्मण ने सावधानी से पूरी घटना का रिहर्सल किया — "मैं महल के घास के मैदान में जा रहा था और यह चीता एक सोने के पिंजरे में बन्द था। इसने मुझसे कहा...।"

जब गीदड़ ने ब्राह्मण की सारी कहानी सुन ली तो बोला — "मुझे लगता है कि यह काफी मुश्किल मामला है क्योंकि जब तक मैं महल की सड़क और पिंजरा न देख लूँ तब तक मैं कुछ कह नहीं सकता।"

सो तीनों पिंजरे की ओर चल दिये। वहाँ जा कर गीदड़ बोला — "अब देख कर मुझे लग रहा कि मैं कुछ कुछ समझ रहा हूँ। पर फिर भी अब तुम मुझे दोबारा बताओ।"

ब्राह्मण ने फिर से दोहराया — "जब मैं राजा के महल की ओर जा रहा था तो चीता एक सोने के पिंजरे में बन्द था...।"

गीदड़ एक हल्की सी हँसी हँसा — "अब ठीक है अब मेरी समझ में आ गया। तुम पिंजरे में थे और चाचा चीता सड़क पर थे। तब...।"

चीता गुस्से में चिल्लाया — "चाचा गीदड़ तुम तो विल्कुल ही बेवकूफ हो। मैं पिंजरे में था।"

गीदड़ बोला — "नहीं नहीं चीते चाचा। ओह यह तो बड़ा मुश्किल सा मामला है चीज़ें मेरे दिमाग में आसानी से नहीं घुस रहीं हैं।"

चीता गुस्से से चिल्लाया — "इसमें मुश्किल क्या है चाचा गीदड़। मुझे नहीं मालूम था कि आप इतने बेवकूफ हैं। यह इतना सीधा सा मामला है और आपकी समझ में ही नहीं आ रहा है। देखिये न मैं कहॉ था।"

कह कर चीता पिंजरे की ओर गया और उसमें जा कर खड़ा हो गया। चीता बस यही तो चाह रहा था। जैसे ही चीता पिंजरे के अन्दर घुसा गीदड़ ने आगे बढ़ कर पिंजरे का दरवाजा बन्द कर दिया।

फिर बोला — "हॉ बाबा अब ठीक है। अब मेरी समझ में आ गया। चीता चाचा ठीक कह रहे थे। अगर आप किसी बुरे आदनी की सहायता करते हैं तो वह आपको नुकसान पहुॅचाने की अवश्य ही कोशिश करेगा।

बाबा आप तो बहुत भले और बुद्धिमान आदमी हैं। आपको चाचा चीते जैसे लोगों से सावधान रहना चाहिये। इस संसार में ऐसे बहुत सारे लोग उन जैसे हैं जो आपको नुकसान पहुॅचा सकते हैं।"

फिर गीदड़ चाचा चीते से बोला — "चाचा चीते मैं बेवकूफ अवश्य हूॅ पर आप क्या हैं?"

कह कर वह हॅसता हुआ अपने रास्ते चला गया और ब्राह्मण राजा के महल चला गया।

5 एक चीता, एक ब्राह्मण और एक गीदड़[11]

शेर और आदमी जैसी यह कहानी एशिया महाद्वीप के भारत देश की है – उसके पंजाब प्रान्त की।

एक बार की बात है कि एक चीता एक शिकारी के जाल में पकड़ा गया। शिकारी ने उसे अपने पिंजरे में बन्द कर लिया था। शेर ने उसके डंडों में से निकलने की बहुत कोशिश की पर वह किसी भी तरह उसमें से नहीं निकल सका।

और जब वह किसी भी तरह से नहीं निकल सका तो गुस्से और दुख के मारे इधर उधर लोटने लगा और काटने लगा।

इत्तफाक से उधर से एक ब्राह्मण गुजर रहा था तो वह उससे बोला — "ए ब्राह्मण। ओ भले आदमी। मेहरबानी कर के मुझे इस पिंजरे में से बाहर निकालो।"

ब्राह्मण नम्रता से बोला — "नहीं भाई नहीं। अगर मैंने तुम्हें यहॉ से निकाल दिया तो तुम मुझे निकलते ही खा जाओगे।"

चीते ने कई कसमें खायीं कि वह ऐसा नहीं करेगा। वह बोला — "बल्कि मैं तो हमेशा तुम्हारा कृतज्ञ रहूँगा और तुम्हारे नौकर की तरह से तुम्हारी सेवा करूँगा।"

---

[11] The Tiger, the Brahman and the Jackal (Tale No 12) – A folktale from Punjab, India, Asia. Adapted from the Web Site : http://digital.library.upenn.edu/women/steel/punjab/punjab-1.html Taken from the book "Tales of the Punjab" By Flora Annie Steel. London: Macmillan & Co. 1894. Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com

जब चीता उसके सामने बहुत रोया बहुत गिड़गिड़ाया तो ब्राह्मण का दिल पिघल गया। वह उस पिंजरे का दरवाजा खोलने पर राजी हो गया।

पिंजरे का दरवाजा खुलते ही चीता उसमें से बाहर आ गया और उस ब्राह्मण को पकड़ लिया। उसको पकड़ कर वह बोला — "तुम कितने बेवकूफ हो जो तुमने मुझे पिंजरे में से बाहर निकाल दिया। अब मुझे तुम्हें खाने से कौन रोक सकता है। क्योंकि इतने समय से इसमें बन्द रहने की वजह से तो मुझे बहुत ज़ोर की भूख भी लगी है।"

ब्राह्मण ने उससे अपनी जान की कई बार भीख मॉगी तो उसको केवल एक वायदा मिला कि वह चीते के इस फैसले को ठीक बताने के लिये तीन लोगों से पूछेगा। अगर वे कह देंगे कि हॉ चीता ठीक कर रहा है तब तो वह उसको खा लेगा नहीं तो वह उसे छोड़ देगा।

ब्राह्मण ने सबसे पहले एक पीपल का पेड़ चुना और उससे पूछा कि वह इस बारे में क्या सोचता था। पीपल के पेड़ ने कुछ गुस्से से कहा — "तुम इसकी क्या शिकायत करते हो। क्या जो भी इधर से गुजरता है मैं उसको अपनी छाया नहीं देता पर वे मेरे साथ क्या क्या करते हैं। वे मेरी शाखाऐं तोड़ तोड़ कर अपने जानवरों को खिलाते हैं। इसलिये शिकायत करने की कोई जरूरत नहीं। आदमी बनो।"

ब्राह्मण दुखी दिल से सोचते हुए थोड़ा और आगे बढ़ा तो उसको एक भेंस दिखायी दी जो कुॅए से पानी निकालने के लिये पहिया चला रही थी। उससे पूछने पर उससे भी उसको कोई बहुत अच्छा जवाब नहीं मिला।

क्योंकि वह बोली — "तुम बहुत ही बेवकूफ हो जो किसी से भलाई की आशा रखते हो। मुझे ही देखो। जब मैं उनको दूध देती हॅू तब वे मुझे बिनौला और तेल की रोटी खिलाते हैं और आज जब मैं उनको दूध नहीं दे पा रही हॅू तो उन्होंने मुझे यहॉ जोत रखा है और खाने के लिये मुझे बेकार की चीज़ें देते हैं।"

ब्राह्मण यह सुन कर बहुत दुखी हुआ। उसने फिर सड़क से उसकी राय पूछी तो सड़क बोली — "जनाब। आप भी कितने बेवकूफ हैं जो किसी से किसी चीज़ की आशा रखते हैं। मुझे देखिये मैं सबके लिये कितनी फायदे की चीज़ हॅू फिर भी सब अमीर हो या गरीब बड़ा हो या छोटा कोई मुझे कुछ भी नहीं देता और बल्कि मुझे अपने पैरों तले रौंदते हुए चला जाता है।

इतना ही नहीं वे मेरे ऊपर अपने पाइप की राख बिखेरते हैं और अनाज का भूसा बिखेरते हैं।"

यह सुन कर ब्राह्मण बहुत दुखी हो कर वापस लौट पड़ा। वापस आते समय रास्ते में उसको एक गीदड़ मिल गया। उसने ब्राह्मण को पुकार कर कहा — "क्या बात है ब्राह्मण देवता। आप

तो ऐसे दुखी लग रहे हैं जैसे किसी ने मछली को पानी से बाहर निकाल कर फेंक दिया हो।"

ब्राह्मण ने उसको जो कुछ भी उसके साथ हुआ था अपनी सारी कहानी सुना दी।

जब वह अपनी सारी कहानी सुना चुका तो गीदड़ बोला — "बड़ी अजीब सी बात है। बात कुछ समझ में नहीं आयी क्योंकि सब कुछ इस तरह से आपस में मिल कर गड्ड मड्ड हो गया है कि मुझे इसका ओर छोर ही पता नहीं चल रहा है। अगर आपको कोई ऐतराज न हो तो क्या आप इसे मुझे दोबारा सुनाना पसन्द करेंगे।"

ब्राह्मण ने उसे सब कुछ फिर से सुना दिया पर गीदड़ ने अपना सिर एक बार फिर ना में हिलाया जैसे उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया हो।

वह दुखी हो कर बोला — "यह सब मेरे दिमाग में कुछ बैठ नहीं रहा। यह मेरे एक कान से अन्दर जा रहा है और दूसरे से बाहर निकले जा रहा है। मैं उस जगह जाना चाहता हूँ जहॉ यह सब हुआ था। तब शायद में कुछ फैसला कर सकूँ।"

सो दोनों चीते के पिंजरे के पास आये। चीता अभी भी वहॉ खड़ा खड़ा ब्राह्मण का इन्तजार कर रहा था और अपने दॉत किटकिटा रहा था और पंजों से जमीन खुरच रहा था।

जंगली जानवर गुस्से से बोला — "मैं तुम्हारा बहुत देर से इन्तजार कर रहा हूॅ। तुमने तो बहुत देर लगा दी। अब हमको अपना खाना खाना शुरू कर देना चाहिये।"

बदकिस्मत ब्राह्मण यह सुन कर डर गया उसके घुटने कॉपने लगे "हमारा खाना। कितनी अच्छी तरह से इसने यह कहा है।"

ब्राह्मण बोला — "जनाब आप मुझे पॉच मिनट दें ताकि मैं यहॉ खड़े इस गीदड़ को सारा मामला समझा सकूॅ। इसकी समझ ज़रा कमजोर है।"

चीता राजी हो गया। ब्राह्मण ने अपनी कहानी फिर से शुरू की। उसने अबकी बार कोई बात नहीं छोड़ी बल्कि उसे जितना बड़ा कर के वह उसे बता सकता था उसने बताया।

बेचारा गीदड़ अपने पंजे मरोड़ते हुए बोला — "उफ़ मेरा बेचारा छोटा सा दिमाग। उफ़। मैं देखना चाहता हूॅ कि यह सब कैसे शुरू हुआ। तुम पिंजरे में थे जब चीता यहॉ से गुजरा।"

चीता चिल्लाया — "उफ़ तुम कितने बेवकूफ हो। पिंजरे में वह नहीं मैं था।"

गीदड़ भी डर के मारे कॉपने का बहाना करते हुए चिल्लाया — "हॉ हॉ मैं भी तो वही कह रहा हूॅ कि मैं पिंजरे में था – नहीं नहीं। मैं पिंजरे में नहीं था। उफ़ मेरी अक्ल को क्या हो गया है। अच्छा अच्छा चीता ब्राह्मण के अन्दर था और पिंजरा इधर से गुजर रहा था।

अरे नहीं नहीं। यह भी ठीक नहीं है। खैर आप मेरी चिन्ता न करें आप अपना खाना खाना शुरू करें क्योंकि मैं इस बात को कभी समझ ही नहीं सकता।"

गीदड़ की बेवकूफी पर गुस्सा होते हुए चीता चिल्लाया — "तुम समझोगे कैसे नहीं। मैं तुम्हें समझाता हूँ। देखो मैं चीता हूँ।"

गीदड़ डरते हुए बोला — "ठीक है माई लौर्ड।"

चीता आगे बोला — "और यह ब्राह्मण है।"

"है माई लौर्ड।"

चीता आगे बोला — "और यह पिंजरा है।"

"है माई लौर्ड।"

चीता फिर बोला — "और मैं पिंजरे में अन्दर था। आयी बात समझ में।"

गीदड़ डर कर बोला — "हॉ – नहीं – माई लौर्ड।"

चीता अबकी बार बहुत ज़ोर से चिल्ला कर बोला — "जब मैं कह रहा हूँ कि मैं पिंजरे में था तो मैं पिंजरे में था। इतनी ज़रा सी बात तुम्हारी समझ में क्यों नहीं आती।"

गीदड़ बोला — "जी। पर जनाब आप पिंजरे में घुसे कैसे।"

चीता बोला — "अरे मैं कैसे घुसा? क्यों, जैसे घुसते हैं।"

गीदड़ बड़ी दीन सी आवाज में बोला — "पर जनाब इसमें घुसते कैसे हैं।"

अब तक चीते का धीरज बिल्कुल खत्म हो चुका था। वह गुस्से में भर कर कूद कर पिंजरे में जा बैठा और बोला — "इस तरह से। अब तुम्हारी समझ में आया कि मैं इसमें कैसे घुसा?"

गीदड़ मुस्कुरा कर बोला — "यह तो बिल्कुल ठीक है।" कह कर उसने जल्दी से पिंजरे का दरवाजा बन्द कर दिया।

वह आगे बोला — "अगर आप मुझे आगे कुछ कहने का मौका दें तो मैं अब यह कहना चाहूँगा कि अब यह मामला ऐसा ही रहेगा जैसा कि पहले था।"

6 ब्राह्मण, मगर और लोमड़ा[12]

शेर और आदमी जैसी यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के भारत देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक दिन एक ब्राह्मण एक जंगल से गुजर रहा था कि एक मगर ने उसे वहॉ से जाते देखा तो उसको पुकार कर कहा — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो ओ ब्राह्मण। मैं अपने माता पिता से बिछड़ गया हूॅ। मेरे माता पिता गंगा नदी में रहते हैं। मैं गंगा नदी का रास्ता नहीं जानता सो मुझे वहॉ तक छोड़ दो।"

ब्राह्मण बहुत दयालु था। उसने मगर को एक थैले में रखा और उसको गंगा नदी तक ले जा कर नदी में छोड़ दिया। जैसे ही मगर थैले में से बाहर निकला तो मगर ने नीच नजर से ब्राह्मण की तरफ देखा और बोला "अब मैं तुम्हें खाऊॅगा। तुम मरने के लिये तैयार हो जाओ।"

ब्राह्मण तो यह सुन कर भौंचक्का रह गया। वह बोला — "तुम मुझे क्यों खाओगे। अभी तो मैंने तुम्हारी सहायता की है।"

ब्राह्मण ने उससे बच कर भाग जाना चाहा पर मगर ने उसकी टॉग पकड़ ली और उसको पानी में खींचने लगा।

---

[12] The Brahmin, the Crocodile and the Fox – a folktale from India (UP), Asia.
Taken from the Web Site :
http://www.kidsgen.com/stories/folk_tales/the_brahmin_the_crocodile_the_fox.htm

ब्राह्मण चिल्लाया — "तुम कितने बेवफा हो।"

इस पर मगर बोला — "मैं बेवफा नहीं हूँ। मैं तो केवल उसी कहावत को मान रहा हूँ कि "हर उस चीज़ को खा लो जिससे तुम्हारी ज़िन्दगी बच जाये।"

ब्राह्मण बोला — "मैं इस कहावत को नहीं मानता। यह बहुत ही जंगली कहावत है। हम कोई और ढूँढते हैं जो यह बात तय कर सके कि तुम जो कह रहे हो वह ठीक है या गलत।

अगर हमको कोई अच्छा न्यायपूर्ण जज मिल जाये जो यह कहे कि तुम्हारी यह कहावत ठीक है तो तुम केवल मुझे ही नहीं बल्कि मेरे पूरे परिवार को खा सकते हो।"

मतलबी मगर ने सोचा "अगर मैं इसी समय ब्राह्मण को खा लेता हूँ तो मेरे हाथ से उसके पूरे परिवार को खाने का सुनहरी मौका हाथ से चला जायेगा। सो उसने ब्राह्मण की टाँग छोड़ दी और तीन जजों से इस कहावत के बारे में उनकी राय जानने की सलाह दी।

दोनों चलने लगे। तो सबसे पहले एक आम का पेड़ सामने आया। ब्राह्मण ने अपने और मगर के बीच में हुई सारी कहानी उसको बतायी और बता कर उससे पूछा — "अब बताओ दोस्त कि क्या यह ठीक है कि "हर उस चीज़ को खा लो जिससे तुम्हारी ज़िन्दगी बचती हो।"

आम के पेड़ ने मुँह लटका कर जवाब दिया — "आदमी भाई मुझे तो यह सच ही लगता है। देखो न। आदमी लोग मेरी छाया में

बैठते हैं पर फिर भी मेरे सारे फल खा जाते हैं। और इतना ही नहीं बाद में वह मुझे काट भी देते हैं।"

मगर और ब्राह्मण दोनों ने उसको धन्यवाद दिया और आगे बढ़ गये। कुछ दूर और चलने के बाद उन्हें एक गाय मिली। ब्राह्मण ने उसको भी बताया कि कैसे उसने मगर की सहायता की और फिर उससे भी पूछा कि क्या यह ठीक था कि "जो कोई चीज़ तुम्हारी ज़िन्दगी बचाये तुम उसको खा लो।"

गाय दुखी आवाज में बोली — "हॉ यह ठीक ही लगता है। देखो मैं आदमी को दूध देती हूॅ। उसको खेती करने के लिये बैल देती हूॅ पर वह मुझे काट कर खा जाता है। या फिर जब मैं इस लायक नहीं रहती कि मैं दूध दे सकूॅ या बैल पैदा कर सकूॅ तो वह मुझे जंगली जानवरों को खाने के लिये छोड़ देता है।"

यह सुन कर मगर ब्राह्मण की तरफ देख कर हॅसा और बोला — "देखो ब्राह्मण देवता, तीन में से दो जजों ने इस बात को स्वीकार कर लिया कि जो मैं कह रहा था वह ठीक था।"

ब्राह्मण कुछ नाउम्मीदी से बोला — "अभी तीसरे जज का फैसला बाकी है।"

कह कर वे फिर और आगे चले। कुछ दूर चलने के बाद उनको एक लोमड़ा मिला। ब्राह्मण ने उसको भी सारी कहानी सुनायी और उससे भी वही सवाल पूछा।

लोमड़ा चालाक था और होशियार था। वह बोला — "इससे पहले कि मैं आपके सवाल का जवाब दूँ ब्राह्मण जी क्या आप मुझे बतायेंगे कि यह इतना बड़ा मगर इस छोटे से थैले में कैसे बन्द था। यह तो मुझे कुछ नामुमकिन सा लग रहा है।"

मगर यह सुनते ही भड़क उठा और बोला — "क्या कहा तुमने नामुमकिन? यह नामुमकिन कैसे हो सकता है? मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि यह कैसे हो सकता है।" और तुरन्त ही थैले में सिमट कर बैठ गया।

यह देख कर ब्राह्मण को इशारा मिल गया। उसने एक बड़ा सा पत्थर उठाया और उसको मगर के सिर पर मार दिया। इस तरह उसने नीच मगर को पत्थर मार मार कर मार दिया।

लोमड़े ने मगर के शरीर का खाना बहुत दिनों तक खाया और ब्राह्मण की जान बच गयी। मगर को उसकी बेवफाई और लालची होने का फल मिल गया।

7 आदमी और साँप[13]

शेर और आदमी जैसी यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के दक्षिण अफ्रीका देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

बहुत पहले की बात है कि एक बार एक आदमी सड़क पर जा रहा था कि जाते जाते उसको एक साँप दिखायी दिया जो एक बड़े से पत्थर के नीचे फँसा पड़ा था जो उसके ऊपर गिर पड़ा था।

साँप ने आदमी से प्रार्थना की — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो। यह बड़ा पत्थर मेरे ऊपर गिर पड़ा है। इसकी वजह से मैं हिल भी नहीं सकता।

सूरज भी बहुत गर्म है और उसकी गर्मी भी मुझे मारे डाल रही है। अगर तुम मेरी सहायता नहीं करोगे तो मैं मर जाऊँगा।"

आदमी बोला — "अगर मैं तुम्हारे ऊपर से यह पत्थर हटाऊँगा तो तुम मुझे काट लोगे तब तुम्हारी बजाय मैं मर जाऊँगा।"

साँप ने पूछा — "मैं उस आदमी को नुकसान क्यों पहुँचाऊँगा जो मेरी सहायता करेगा। इसके अलावा मैं इतना कमजोर हूँ कि मुझमें केवल इतनी ही ताकत है कि इस घटना से ठीक होने के बाद मैं अपने घर तक रेंगता हुआ चला जाऊँ।"

---

[13] The Man and the Snake – a folktale from South Africa, Africa. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=114
Retold and written by Mike Lockett.

वह आदमी बेचारा बहुत ही भला और दयालु आदमी था वह किसी को दुखी नहीं देख सकता था चाहे वह साँप ही क्यों न हो।

सो उसने साँप के ऊपर से वह बड़ा पत्थर हटा दिया। पर जैसे ही उस आदमी ने वह पत्थर हटाया साँप ने अपना सिर ऊपर उठाया और अपना मुँह खोल कर बोला — "अब तुम मेरे काटने के लिये तैयार हो जाओ।"

आदमी बोला — "यह तो ठीक नहीं है। तुमने तो मुझे न काटने का वायदा किया था अगर मैंने तुम्हारी सहायता की तो।"

साँप बोला — "जब तुमने मुझे देखा था तो तुम जानते थे मैं एक साँप था। तुम यह भी जानते थे कि साँप काटते हैं। तुमने यह कहा भी था कि अगर तुमने मुझे आजाद कर दिया तो मैं तुमको काट लूँगा। तुम बिल्कुल ठीक थे। अब तुम मेरे काटने के लिये तैयार हो जाओ बस।"

आदमी बोला — "ठहरो ठहरो, यह सब ठीक नहीं है।"

साँप बोला — "तो फिर यह कौन बतायेगा कि ठीक क्या है?"

आदमी बोला — "कम से कम हम किसी और जानवर से यह पूछ सकते हैं कि तुम्हारा मुझे काटना ठीक है या नहीं।"

साँप बोला — "ठीक है तुम पूछना चाहते हो तो पूछ सकते हो पर मैं जानता हूँ कि दूसरे लोग भी मुझ ही से राजी होंगे।"

सो पहले वे लोग एक हयीना[14] के पास गये। आदमी ने हयीना ने पूछा — "क्या सॉप के लिये यह ठीक है कि वह मुझे काटे जबकि मैंने एक बड़ा पत्थर उसके ऊपर से हटा कर उसकी जान बचायी है?"

हयीना ने सोचा कि जब आदमी ने मेरे साथ कभी भी ठीक से बर्ताव नहीं किया तो सॉप भी उसके साथ ठीक से बर्ताव क्यों करे?

इसके अलावा उसने सोचा कि जब सॉप उस आदमी को काट लेगा और वह मर जायेगा तो उसको भी आदमी खाने के लिये मिल जायेगा। सो उसने आदमी से कहा कि सॉप ठीक कह रहा था।

सॉप ने उस आदमी को काटने के लिये अपना सिर उठाया कि आदमी फिर बोला — "थोड़ा और इन्तजार करो मैं एक और जानवर से पूछ लूँ।"

सो वे आगे चले तो उनको एक खरगोश मिला। सॉप ने खरगोश की तरफ देख कर घूरा और बोला — "क्या मेरे लिये यह ठीक है कि मैं आदमी को उसके मेरे ऊपर से पत्थर हटाने के बाद काटूँ?"

खरगोश जानता था कि अगर वह सॉप की तरफ से नहीं बोला तो सॉप उसको काट लेगा इसलिये वह बोला — "आदमी ने मेरी कभी कोई सहायता नहीं की तो मैं उसकी सहायता क्यों करूँ□सो यह ठीक है कि तुम आदमी को काट लो।"

[14] Hyena – a tiger-like animal. See his picture above.

सो साँप ने एक बार फिर आदमी को काटने के लिये अपना सिर उठाया। आदमी ने नाउम्मीदी से कहा — "ठीक है इससे पहले कि तुम मुझे काटो हम एक जानवर को और देख लें। मेरे ऊपर मेहरबानी करो।"

साँप राजी हो गया। उसी समय एक गीदड़ उधर से गुजरा। आदमी ने उस गीदड़ से पूछा — "क्या साँप के लिये यह ठीक है कि उसके ऊपर से पत्थर हटा कर उसकी जान बचाने के बदले में वह मुझे काटे?"

गीदड़ बोला — "मुझे तो यह विश्वास ही नहीं हो रहा कि साँप किसी ऐसे पत्थर के नीचे आ सकता है जिसको वह हटा कर न निकल सकता हो। जब तक मैं अपनी आँखों से न देख लूँ मैं इस बात पर विश्वास ही नहीं कर सकता। तुम मुझे वह जगह दिखाओ जहाँ यह घटना हुई थी।"

सो सब लोग वहाँ गये जहाँ साँप पत्थर के नीचे बैठा था। वहाँ पहुँच कर गीदड़ ने साँप से कहा — "साँप, अब तुम लेट जाओ और मुझे देखने दो कि वह पत्थर तुम्हारे ऊपर कैसे रखा था।"

साँप एक जगह लेट गया और आदमी ने उसके ऊपर वह पत्थर रख दिया जो उसने पहले हटाया था। गीदड़ ने पूछा — "क्या आदमी ने तुमको इसी हालत में पाया था?"

आदमी और साँप दोनों एक साथ बोले — "हाँ।"

आदमी फिर वह पत्थर हटाने के लिये आगे बढ़ा तो गीदड़ बोला — "तुम बिल्कुल ही बेवकूफ हो क्या? सॉप के ऊपर से पत्थर नहीं हटाओ। वह तुमको काटना चाहता था और तुम उसको बचाना चाहते हो? अगर तुम यह पत्थर हटा दोगे तो वह तुमको फिर से काट लेगा। चलो यहॉ से चलें। यह यहीं ठीक है।"

आदमी और गीदड़ सॉप को वहीं पत्थर के नीचे छोड़ कर चले गये। इस तरह गीदड़ ने आदमी की जान बचायी।

8 एक गोरा और एक सॉपिन[15]

यह लोक कथा भी इससे पहले वाली जैसे ही लोक कथा है और यह भी दक्षिण अफ्रीका की ही है। दोनों में कुछ ज़्यादा फर्क नहीं है।

एक बार की बात है कि एक गोरे आदमी[16] को एक सॉपिन मिली जो एक बहुत बड़े पत्थर के नीचे दबी पड़ी थी। इससे वह उठ ही नहीं पा रही थी। गोरे को उसे इस हालत में देख कर दया आ गयी तो उसने उसके ऊपर से पत्थर हटा दिया। पर जैसे ही उसने उसके ऊपर से पत्थर उठाया तो व्ह उसको काटना चाहती थी।

गोरा डर गया और बोला — "रुको। पहले हम कुछ अक्लमन्द लोगों से पूछ लें कि क्या तुम्हारा मुझे इस तरह से काटना ठीक है।"

सो वे सबसे पहले हयीना[17] के पास गये। उसके पास जा कर गोरे ने उससे पूछा — "क्या यह ठीक है कि यह सॉपिन मुझे काटे जबकि मैंने इसको एक बड़े से पत्थर के नीचे से निकाल कर इसकी सहायता की है क्योंकि वहॉ से तो यह हिल भी नहीं सकती थी।"

---

[15] The White Man and Snake – a folktale from South Africa, Africa.
Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft25.htm

[16] Translated for the words "White Man". Since South Africa is mostly Black when the Europeans came there they were known as "White Men".

[17] Hyena is a tiger-like animal. See its picture above.

हयीना ने सोचा कि उसको भी गोरे के शरीर का कुछ हिस्सा खाने के लिये मिल जायेगा सो वह बोला — "अगर इसने तुम्हें काट लिया तो क्या हुआ। इसका काम काटना है यह तो काटेगी ही।"

तब वह सॉपिन उसको फिर से काटने के लिये तैयार हुई तो गोरा बोला — "ज़रा रुको। हम किसी और अक्लमन्द से भी पूछ लें ताकि मुझे यह ठीक से पता चल जाये कि तुम ठीक हो या नहीं।"

वे आगे चले तो उनको एक गीदड़ मिला तो गोरे ने उससे भी यही पूछा — "क्या यह ठीक है कि यह सॉपिन मुझे काटे जबकि मैंने इसको एक बड़े से पत्थर के नीचे से निकाल कर इसकी सहायता की है क्योंकि वहॉ से तो यह हिल भी नहीं सकती थी।"

गीदड़ कुछ सोच कर बोला — "मुझे तो यह विश्वास ही नहीं हो रहा कि यह सॉपिन किसी ऐसे पत्थर के नीचे भी दबी हो सकती है जिसके नीचे से से यह निकल न सके। जब तक मैं खुद इसको वैसे ही पड़ा न देख लूॅ तब तक मैं विश्वास नहीं कर सकता।

इसलिये चलो वहीं चलो जहॉ तुम्हारा कहना है कि यह उस पत्थर के नीचे पड़ी हुई थी।

सो वे लोग उसी जगह आये जहॉ से पत्थर हटा कर गोरे ने उसको बाहर निकाला था। गीदड़ ने कहा — "अब सॉपिन तुम उसी जगह वैसे ही लेट जाओ जब तुम्हें इस आदमी ने बाहर निकाला था।" सो वह सॉपिन वहॉ वैसे ही लेट गयी जैसे वह पहले लेटी हुई थी।

गोरे ने भी उसको उसी तरह से फिर से पत्थर से ढक दिया जैसे उसने जब वह पत्थर उठाया था जब वह वहॉ लेटी हुई थी। अब वह वहॉ से बिल्कुल भी नहीं हिल पा रही थी।

तो अब वह गोरा फिर से उसके ऊपर से पत्थर हटाना चाह रहा था कि गीदड़ बोला — "अरे यह क्या बेवकूफी कर रहे हो। एक बार पत्थर हटाने की बेवकूफी कर के क्या तुम्हारा अभी मन नहीं भरा। क्या तुम चाहते कि जब तुम उसके ऊपर से पत्थर हटा दो तो वह फिर से बाहर निकल कर फिर से तुम्हें काटने लगे।"

सो उन्होंने सॉपिन को वहॉ उसी पत्थर के नीचे छोड़ा और आगे चले गये। इस तरह गोरे की बेवकूफी से सॉपिन उसको काटने वाली थी और गीदड़ की अक्लमन्दी से वह सॉपिन के काटे से बच गया।

9 एक यात्री का कारनामा[18]

शेर और आदमी जैसी कहानियों के इस संग्रह में यह कहानी अरब देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

ऐसा कहा जाता है कि एक बार एक आदमी ऊँट पर चढ़ कर यात्रा करने निकला। यात्रा के दौरान वह एक ऐसी जगह आ पहुँचा जहॉ उसी कारवॉ के लोगों ने आगे बढ़ने से पहले आग जला रखी थी।

वहॉ पंखे जैसी हवा चल रही थी जिससे उस आग के अंगारे और जल रहे थे सो एक बार उससे एक लपट पैदा हो गयी। इससे चिनगारियॉ पैदा हो गयीं और वे जंगल की तरफ उड़ गयीं।

वहॉ कुछ सूखी लकड़ी पड़ी थीं वे चिनगारियॉ उनके ऊपर जा कर पड़ीं तो उनमें आग लग गयी। वह आग ऐसी दिखायी दे रही जैसे सारे मैदान में ट्यूलिप के फूल[19] खिल गये हों।

इस आग के बीच एक बहुत बड़ा सॉप था जो आग की लपटों में घिरा पड़ा था। उसके वहॉ से बच कर भागने का कोई तरीका नहीं था।

---

[18] The Traveller's Adventure – a folktale from Arabia, Asia.
Adapted from the Web Site : https://www.worldoftales.com/Oriental_folktales.html
Taken from the Book "Folk-lore and Legends : Oriental", by Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. 1889. 13 Folktales. Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com

[19] Tulip flowers. See their picture above.

अब वह या तो मछली की तरह से भुन जाने वाला था या फिर तीतर की तरह से भुन कर मेज पर रखा जाने वाला हो रहा था कि उसकी ऑखों से खून टपकने लगा।

उसने देखा कि एक आदमी अपने ऊॅट के साथ वहॉ रुका हुआ है तो उसने उससे प्रार्थना की — "क्या आप मेहरबानी कर के मेरे ऊपर दया करेंगे। क्या आप मेरी वह गॉठ खोल देंगे जिससे मैं यहॉ बॅधा हुआ हूॅ।"

अब यह यात्री तो एक बहुत ही भला आदमी था और बहुत ही धार्मिक था। जब उसने सॉप की शिकायत सुनी और उसकी इतनी खराब हालत देखी तो उसके दिमाग में आया कि "यह तो सॉप है और यह तो आदमी का दुश्मन है पर फिर भी क्योंकि इस समय यह परेशानी में है इसलिये मुझे इसकी सहायता करनी चाहिये। सहायता का फल तो हमेशा ही अच्छा होता है और उससे मुक्ति भी मिलती है।"

इस तरह विचार कर के उसने एक थैला अपने भाले की नोक पर लटकाया और उसको सॉप की तरफ बढ़ा दिया। सॉप यह देख कर बहुत खुश हुआ कि अब वह इस आग से बच सकता है। जैसे ही थैला उसके पास तक आया तो वह उसके थैले में घुस गया। आदमी ने थैला वापस खींच लिया और वह आग से बच गया।

थैला बाहर खींच कर आदमी ने उसे थैले से बाहर निकाला और उससे कहा — "अब तुम जहॉ चाहो जा सकते हो पर अपने बचने

के लिये अल्लाह को धन्यवाद देना मत भूलना। अब तुम जा कर आराम करो और आदमियों को तंग करना छोड़ दो क्योंकि जो ऐसा काम करते हैं वे बेईमान होते हैं। दूसरी बात – अल्लाह से डरो और किसी को कभी दुख मत पहुँचाओ यही असली मुक्ति है।"

सॉप बोला — "ओ नौजवान अल्लाह तुम्हें शान्ति दे क्योंकि सच में मैं यहॉ से तब तक नहीं जाने वाला जब तक कि मैं तुम्हें और तुम्हारे इस ऊँट को काट न लूँ।"

आदमी चिल्लाया — "मगर ऐसा कैसे? क्या मैंने तुम्हारा कुछ भला नहीं किया? मेरी दया का ऐसा बदला क्यों? मैंने तो तुम्हारा भला करने की कोशिश की पर तुम मेरे साथ ऐसा अन्याय क्यों कर रहे हो?"

सॉप बोला — "यह तो तुम ठीक कहते हो। तुमने मेरे ऊपर दया तो दिखायी है पर यह दया तुमने एक अयोग्य चीज़ पर दिखायी है। जब तुम जानते हो कि मैं लोगों को काटता हूँ तो इसके फलस्वरूप तुमको अपने आपको भी उसी नियम में रखना चाहिये था जिसमें एक योग्य आदमी को नुकसान पहुँचाने की सजा मिलती है।

इसके अलावा सॉप और आदमी में बहुत पुरानी दुश्मनी है। और जो लोग आगे तक का देख पाते हैं उनके लिये अक्लमन्दी का नियम यही है कि वह दुश्मन के सिर पर वार करें।

अगर तुम्हें अपनी रक्षा करनी थी तो तुम्हें मुझे मर जाने देना चाहिये था पर मेरी तरफ दया दिखा कर तुमने अपनी सुरक्षा छोड़

दी। इसलिये अब यह जरूरी है कि मैं तुम्हें काट लूँ ताकि तुम्हारे साथ हुए इस काम को देख कर लोग तुमसे कुछ सीख लें।"

आदमी चिल्लाया — "ओ सॉप तुम न्याय करने वालों की कोई भी टीम बुलालो और उनमें से किसी से भी पूछ कर मुझे बताओ कि यह किसी भी धर्म की कौन सी किताब में लिखा है कि जिसने भी तुम्हारे साथ कोई अच्छाई की हो तुम उसके साथ बुरा करो।

या फिर ऐसा कहॉ होता है कि तुम अच्छाई का बदला बुराई से दो। या जिस किसी ने तुमको सुख दिया हो उसके बदले में तुम उसको दुख दो।"

सॉप बोला — "ऐसा आदमियों की दुनियॉ में होता है। मैं तो केवल तुम्हारे नियमों के ऊपर ही चल रहा हूँ। जो चीज़ मैंने तुमसे खरीदी है वही मैं तुम्हें बेच रहा हूँ। तुम एक पल के लिये वह चीज़ खरीद कर तो देखो जो तुम बरसों से बेच रहे हो।"

यात्री ने उसको समझाने की बहुत कोशिश की पर सॉप हमेशा यही कहता रहा — "मै तुम्हारे साथ उसी तरह से बर्ताव कर रहा हूँ जैसा कि तुम मेरे साथ करते हो।"

आदमी इस बात से इनकार करता रहा पर फिर बोला — "चलो ठीक है हम कुछ जजों को बुलाते हैं। अगर तुम अपनी बात साबित कर सके तो जैसा तुम कहोगे मैं वैसा ही करूँगा।"

यह सुन कर सॉप ने इधर उधर देखा तो देखा कि पास में ही कुछ दूरी पर एक गाय चर रही थी। वह आदमी से बोला — "चलो हम लोग इस सवाल के बारे में इस गाय से पूछते हैं।"

सो वे गाय के पास चले। जब वे गाय के पास पहुॅचे तो सॉप ने अपना मुॅह खोल कर उससे पूछा — "ओ गाय अगर किसी को किसी से कोई अच्छाई मिले तो उसको उसे वापस क्या देना चहिये।"

गाय बोली — "अगर तुम मुझसे आदमी की तरफ से पूछना चाहते हो तो अच्छाई का बदला हमेशा ही बुरा होता है। मैं तुम्हें अपनी बात बताती हूॅ।

मैं एक बार बहुत समय के लिये एक किसान के पास थी। वहॉ मैं हर साल एक बच्चे को जन्म देती थी। उसके घर के लिये दूध और घी[20] देती थी। उसके बच्चों की ज़िन्दगी मेरे ही ऊपर निर्भर थी।

पर जब मैं बूढ़ी हो गयी और मेरे बच्चे होना बन्द हो गये तो उसने मुझे रखने से मना कर दिया और मुझे मरने के लिये जंगल में धकेल दिया। अपना खाना ढूॅढने और आराम से घूमने के बाद मैं मोटी हो गयी तब मेरा पुराना मालिक मेरी यह हालत देख कर एक कसाई को साथ ले आया और उसने मुझे उसे बेच दिया। आज मैं काट दी जाऊॅगी।"

[20] Ghee is the clarified butter

सॉप बोला — "तुमने सुना इस गाय ने क्या कहा। बस अब तुम मरने के लिये जल्दी से तैयार हो जाओ।"

आदमी बोला — "केवल एक आदमी की राय पर काम करना कोई अक्लमन्दी नहीं है। हमको किसी एक और की राय और लेनी चाहिये।"

सॉप ने फिर चारों तरफ देखा तो देखा कि पास में ही एक पेड़ खड़ा है। उस पर एक भी पत्ता नहीं था। उसकी नंगी टहनियॉ आसमान तक जा रही थीं।

सॉप बोला — "चलो इस पेड़ से चल कर पूछते हैं।"

सो दोनों उस पेड़ के पास पहुँचे। वहॉ जा कर सॉप बोला — "किसी की अच्छाई का बदला उसको क्या देना चाहिये।"

पेड़ बोला — "आदमियों में ऐसा होता है कि भलाई का बदला बुराई और नुकसान से दिया जाता है। और मैं जो ऐसा सोचता हूँ उसको साबित भी कर सकता हूँ।

मैं एक पेड़ हूँ जो इस दुखी हालत में इस तरह एक टॉग पर खड़ा हो कर बढ़ रहा हूँ। एक समय था जब मैं फल फूल रहा था और हरा था। सबकी सेवा कर रहा था। जब कोई आदमी थका हारा गर्मी का मारा इस तरफ से निकलता था वह मेरे साये में बैठता था। मेरी शाखाओं के नीचे सो जाया करता था।

जब उस आदमी की ऑखों से थकान का बोझ थोड़ा हटता तो वह ऊपर की तरफ मेरी शाखाओं की तरफ देखता और कहता —

"तुम्हारी टहनियों के तो तीर बहुत अच्छे बनेंगे।" "तुम्हारी उस डाली का तो हल बहुत अच्छा बनेगा।" "इस पेड़ के तने के तो तख्ते बहुत अच्छे बनेंगे।

अगर उनके पास कोई कुल्हाड़ी या आरी होती तो वे मेरी शाखाओं में से कुछ को चुनते और उन्हें काट कर ले जाते। इस तरह जिन लोगों को मैं आराम देता वे मुझे दुख दर्द दे कर जाते। जबकि मैं उनकी चिन्ताओं के समय में अपनी छाया दे कर उनको आराम देता वे मुझे जड़ से उखाड़ने की सोचते।"

सॉप बोला — "देखा तुमने। दो जज तो हो गये इसलिये अब तुम सोच लो तुम्हें क्या करना है वरना मैं तुम्हें काटने वाला हूँ।"

आदमी बोला — "सॉप यह तो तुम ठीक कह रहे हो पर ज़िन्दगी के लिये प्यार बहुत ज़्यादा होता है और जब तक आदमी के शरीर में ताकत होती है दिल से उसका प्यार निकालना बहुत मुश्किल है।

मेहरबानी कर के एक आखिरी जज और देख लें फिर वह जो कुछ भी कहेगा मैं उसे मान लूँगा।"

अब यह बहुत अच्छा हुआ कि वहीं पास में एक लोमड़ा खड़ा हुआ था। वह इनकी बहस सुन रहा था। वह इनके पास आया। सॉप ने जब उसे पास खड़े देखा तो बोला — "यह देखो यह लोमड़ा है चलो इसी से पूछते हैं।"

पर इससे पहले कि आदमी कुछ बोलता लोमड़ा चिल्लाया — "क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि भलाई का बदला हमेशा ही बुराई होता है। पर तुमने इस सॉप के साथ ऐसी क्या अच्छाई की है जिसके लिये तुम्हें इस बुराई की सजा भुगतनी पड़ रही है।"

यह सुन कर आदमी तो कॉप गया फिर भी उसने सॉप को बचाने की घटना पूरी की पूरी उसको कह सुनायी।

लोमड़ा बोला — "तुम एक बहुत ही अक्लमन्द आदमी नजर आते हो फिर तुम मुझसे झूठ क्यों बोल रहे हो। एक अक्लमन्द आदमी झूठ कैसे बोल सकता है।"

सॉप बोला — "लोमड़े भाई यह आदमी सच बोल रहा है। तुम इसका यह थैला देखो जिसमें रख कर इसने मुझे बचाया है।"

लोमड़ा आश्चर्यचकित होने का बहाना करते हुए बोला — "अरे इस बात पर तो मैं विश्वास कर ही नहीं सकता। तुम जैसे बड़े सॉप इस छोटे से थैले में कैसे आ सकते हो।"

सॉप बोला — "लामड़े भाई मैं इसके अन्दर आ सकता हूॅ अगर तुमको इस बात पर विश्वास नहीं हो रहा तो मैं तुम्हें इस थैले में दोबारा घुस कर दिखा सकता हूॅ।"

लोमड़ा बोला — "क्या सचमुच में। अगर तुम मुझे इस थैले में घुस कर दिखा दो तो मैं तुम्हारा विश्वास कर लूॅगा और फिर तुम दोनों का झगड़ा सिलटा दूॅगा।"

यह सुन कर यात्री ने अपने थैले का मुॅह खोल दिया और सॉप लोमड़े के अविश्वास पर कुछ गुस्सा सा होते हुए उस थैले में घुस गया। जैसे ही वह अन्दर घुसा लोमड़ा चिल्लाया — "ओ नौजवान जब तुम अपने दुश्मन को पकड़ लो फिर उस पर दया दिखाने की कोई जरूरत नहीं है।

जब दुश्मन को हरा दो और वह तुम्हारे काबू में हो तो अक्लमन्दी इसी में है कि उसके ऊपर कभी कोई दया नहीं करनी चाहिये।"

यात्री ने उसका इशारा समझा थैले का मुॅह बॉधा और एक पत्थर के ऊपर दे कर मार दिया। इससे सॉप मर गया और उसने अपनी जाति के लोगों की जानें बचा लीं।

10 आदमी सॉप और लोमड़ी[21]

एक बार की बात है कि एक शिकारी था वह एक खान के पास से गुजर रहा था कि उसको एक सॉप एक पत्थर के नीचे दब हुआ दिखायी दे गया। सॉप ने शिकारी से बहुत विनती की कि वह उसको वहॉ से आजाद करा दे।

पर आदमी ने कहा — "मैं तुम्हें यहॉ नहीं निकालूँगा क्योंकि अगर मैंने तुम्हें निकाला तो तुम मुझे काट खाओगे।"

सॉप गिड़गिड़ाता हुआ बोला — "नहीं भाई। मैं तुम्हें नहीं खाऊँगा। तुम मुझे यहॉ से बाहर तो निकाल दो।"

सो शिकारी ने उसे बाहर निकाल दिया। जैसे ही वह बाहर आया तो बोला — "अब मैं तुम्हें खाऊँगा।"

शिकारी बोला — "यह तुम क्या कह रहे हो। अभी अभी तुमने मुझसे यह वायदा नहीं किया था कि अगर मैं तुमको यहॉ से बाहर निकाल दूँ तो तुम मुझे नहीं खाओगे।"

सॉप बोला — "भूख को कोई वायदा याद नहीं रहता।"

शिकारी बोला — "अगर तुमको मुझे खाने का कोई अधिकार न हो तो क्या तुम मुझे खाओगे।"

"नहीं"

"तो चलो हम तीन लोगों से पूछते हैं।"

[21] The Man the Serpent and the Fox. A folktale from Italy.

वे दोनों जंगल गये तो वहाँ उनको एक ग्रेहाउन्ड कुत्ता मिला। उन्होंने उससे पूछा तो कुत्ता बोला — "मेरा एक मालिक था। मैं उसके साथ शिकार पर जाया करता था और खरगोश पकड़ा करता था। जब मैं उनको घर लाया करता था तो मेरा मालिक मुझे कोई भी अच्छी चीज़ खाने के लिये नहीं देता था।

अब जब मैं एक कछुआ भी नहीं पकड़ सकता क्योंकि मैं बूढ़ा हो गया हूँ मेरा मालिक अब मुझे मारना चाहता है। इसलिये मैं तुम्हें सजा देता हूँ कि साँप तुम्हें खा जाये। क्योंकि जो आदमी भला करता है उसके साथ बुरा ही होता है।"

साँप बोला — "देखा तुमने। एक फैसला तो हो गया।"

वे और आगे बढ़े तो उनको एक घोड़ा मिला। पूछने पर उसने भी यही कहा कि साँप के लिये यह ठीक है कि वह आदमी को खा ले।

उसने कहा कि क्योंकि मेरा भी एक मालिक था जिसको मैं बहुत दूर दूर तक ले जाया करता था। तब वह मुझे ठीक से खाना दिया करता था। पर क्योंकि अब मैं ऐसा नहीं कर सकता तो वह मुझे मारना चाहता है।"

साँप उससे फिर बोला — "देखा तुमने। अब दो जजों ने मेरी तरफ फैसला दे दिया है।"

वे फिर आगे बढ़े तो उनको एक लोमड़ी मिली। आदमी ने लोमड़ी से कहा — "लोमड़ी बहिन। मैं एक खान के पास से गुजर

रहा था तो मैंने इस सॉप को एक बड़े से पत्थर के नीचे मरता हुआ देखा। इसने मुझसे सहायता मॉगी तो मैंने इसको वहॉ से निकाल दिया। अब यह कहता है कि "मैं तुझे खाऊॅगा।"

पूछा तो वह बोली — "अगर तुम मुझे जज बनाना चाहते हो तो ठीक है मैं तुम्हारे लिये जज का काम करूॅगी। पर पहले में यह घटना जहॉ हुई थी वह जगह देखना चाहूॅगी।"

सो तीनों उसी जगह वापस पहुॅचे। लोमड़ी बोली — "सॉप जी अब आप बताइये कि आप किस हालत में थे जब इस आदमी से आपने सहायता मॉगी।"

सॉप एक पत्थर के नीचे जा कर बैठ गया। लोमड़ी ने उसके ऊपर रखा वाला पत्थर कुछ ऐसे रख दिया कि अब सॉप हिल भी नहीं सकता था।

फिर उसने सॉप से पूछा — "क्या आप इसी तरह से इस पत्थर के नीचे बैठे थे जब आपने आदमी से सहायता मॉगी।"

"जी हॉ।"

"ठीक है तब आप ऐसे ही यहॉ बैठे रहिये।

11 कृतघ्न[22]

एक बार की बात है कि इटली में एक आदमी था जो जंगल में लकड़ी इकट्ठी करने गया। वहॉ उसने एक सॉप देखा जो एक पत्थर के नीचे आ कर कुचल गया था। उसने अपनी कुल्हाड़ी की सहायता से वह बड़ा पत्थर उठाया तो सॉप रेंग कर बाहर आ गया।

जब वह थोड़ी देर बाहर पड़ा रहा तब वह बोला — "मैं तुम्हें खाना चाहता हूॅ।"

आदमी बोला — "आराम से आराम से। पहले हम किसी से इस बात का फैसला करा लें और अगर मेरी कोई गलती हो तब तुम मुझे खा लेना।"

सो पहला जज जो उनको मिला वह था घोड़ा। वह बिल्कुल डंडी जितना पतला था और एक ओक के पेड़ से बॅधा हुआ था। जहॉ तक उसका मुॅह जाता था वहॉ तक तो उसने पेड़ की पत्तियॉ खा ली थीं क्योंकि वह भूखा था।

सॉप ने उस घोड़े से पूछा — "क्या यह ठीक है कि मैं इस आदमी को खा लूॅ जिसने मेरी जान बचायी है।"

घोड़ा बोला — "अरे यह तो ठीक से भी ज़्यादा है। ज़रा मुझे देखो। मैं एक बहुत ही अच्छा घोड़ा था। मैं अपने मालिक को कई साल तक कहॉ कहॉ ले कर नहीं गया। और अब मुझे क्या मिला।

[22] The Ingrates.

अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मैं कुछ नहीं कर सकता तो उन्होंने मुझे यहॉ इस ओक के पेड़ से बॉध दिया है। कुछ पत्ते खाने के बाद मैं मर जाऊँगा।

तुम इस आदमी को खा लो क्योंकि जो लोग अच्छा करते हैं उन्हें कोई इनाम नहीं मिलता और जो बुरा करते हैं उनको अच्छा इनाम मिलता है। खा लो इससे तुम आज यह एक अच्छा काम करोगे।"

उसके बाद उनको एक शहतूत का पेड़ मिला। उसके अन्दर छेद ही छेद हो रहे थे क्योंकि वह बहुत बूढ़ा हो गया था। सॉप ने उससे भी पूछा कि क्या यह ठीक था कि वह उस आदमी को खा ले जिसने उसकी जान बचायी हो।

पेड़ तुरन्त ही बोला — "हॉ बिल्कुल। मैंने अपने मालिक को कितनी सारी पत्तियॉ दी हैं उसके रेशम के कीड़ों को खाने के लिये जिससे उसने बहुत ही बढ़िया किस्म के कीड़े पैदा किये हैं। पर देखो अब जब में सीधा खड़ा नहीं हो सकता तो मेरा मालिक कहता है कि वह मुझे आग में डलवा देगा।

तुम इसे खा जाओ ऐसा कर के तुम बहुत अच्छा करोगे।"

उसके बाद उनको एक लोमड़ी मिली। आदमी उसको एक तरफ को ले गया और उससे विनती की कि वह उसकी तरफ ही बोले। लोमड़ी ने कहा कि अपना फैसला देने से पहले वह यह मामला खुद देखेगी कि सॉप को कैसे बचाया गया था।

सो वे तीनों उसी जगह पर वापस लौटे जहॉ यह घटना हुई थी और आ कर सब कुछ वैसा ही कर दिया जैसा इस घटना होने से पहले था। पर जैसे ही आदमी ने सॉप पत्थर के नीचे देखा तो चिल्लाया — "तुम जहॉ हो मैं तुम्हें वहीं छोड़ता हूॅ।"

और फिर सॉप वहीं रहा।

अब लोमड़ी इस फैसला करने के लिये एक थैला भर कर मुर्गियॉ चाह रही थी तो आदमी ने उसे वे अगली सुबह देने का वायदा किया। तो लोमड़ी अगली सुबह अपनी मुर्गियॉ लेने के लिये आदमी के घर पहुॅची।

आदमी ने पहले ही कुछ कुत्ते एक थैले में भर कर रखे हुए थे सो उसने वह थैला उसको पकड़ा दिया और उससे कहा कि वह उन मुर्गियों को वहॉ से कहीं दूर ले जा कर खाये क्योंकि उसके शोर से घर की मालकिन को पता लग सकता था।

सो लोमड़ी ने उस थैले को वहीं नहीं खोला और उसको ले कर कुछ दूर चली गयी। दूर एक घाटी में पहुॅच कर उसने वह थैला खोला तो लो उसमें तो मुर्गियों की बजाय कुत्ते थे जैसे ही वे कुत्ते बाहर निकले उस लोमड़ी को खा गये।

यही दुनियॉ है कि जो भलाई करता है उसको नुकसान होता है और जो बुरा काम करता है उसको इनाम मिलता है।

12 ब्राह्मण चीता और छह जज[23]

शेर और आदमी जैसी कहानियों में यह कहानी भारत की लोक कथाओं से ली गयी है। एक बार की बात है कि एक ब्राह्मण सड़क पर चला जा रहा था कि उसने देखा कि वहॉ गॉव वालों ने एक बहुत बड़े चीते को कटघरे में बन्द किया हुआ था।

जब ब्राह्मण उस कटघरे के पास से गुजर रहा था तो चीते ने उसको पुकारा — "ब्राह्मण भाई ब्राह्मण भाई। मुझ पर दया करो। मुझे बस एक मिनट के लिये इस कटघरे में से बाहर निकाल दो। मुझे बहुत ज़ोर से प्यास लगी है मुझे पानी पीना है। मैं प्यास से मरा जा रहा हूॅ।"

ब्राह्मण बोला — "नहीं मैं नहीं निकाल सकता। क्योंकि जैसे ही मैंने तुम्हें इस कटघरे में से बाहर निकाला तो तुम मुझे खा जाओगे।"

चीता गिड़गिड़ाया — "नहीं दया के सागर। ऐसा नहीं होगा। मैं इतना कृतघ्न नहीं हो सकता। बस मुझे बाहर निकाल दो मैं पानी पी कर वापस आ जाऊॅगा।"

तो ब्राह्मण को उस पर दया आ गयी उसने कटघरे का दरवाजा खोल दिया। पर जैसे ही उसने दरवाजा खोला चीता उसके अन्दर से

[23] The Brahman, the Tiger and Six Judges. Tale No 14. Taken from the Book : "Old Deccan Days". By Mary Frere. 1868. Hindi translation of this whole book is available from hindifolktales@gmail.com

कूद कर बाहर आ गया और बोला — "अब पहले मैं तुम्हें खाऊॅगा और उसके बाद पानी पियूॅगा।"

ब्राह्मण यह सुन कर घबरा गया पर जल्दी ही बोला — "तुम मुझे इतनी जल्दी मत मारो। पहले हम छह लोगों की राय ले लें और अगर सारे लोग यह कह दें कि "हॉ यह ठीक है कि तुम इसे खा सकते हो।" तो तुम मुझको खा लेना।"

चीता बोला — "हॉ यह ठीक है। ऐसा ही होगा जैसा तुमने कहा है। हम पहले छह लोगों की राय पूछेंगे।"

सो चीता और आदमी थोड़ा सा आगे चले और एक बरगद के पेड़ के पास आये। ब्राह्मण ने उससे पूछा — "ओ बरगद के पेड़ ओ बरगद के पेड़। तुम मेरी बात सुनो और अपना फैसला सुनाओ।"

बरगद का पेड़ बोला — "मुझे किस बात पर फैसला देना है।"

ब्राह्मण बोला — "इस चीते ने कहा कि मुझे पानी पीना है मुझे इस कटघरे में से निकाल दो। इसने वायदा किया कि अगर मैंने इसे निकाल दिया तो यह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुॅचायेगा। पर अब जब मैंने इसे निकाल दिया है तो यह मुझे खाना चाहता है। इसका मेरे साथ ऐसा करना क्या ठीक है?"

बरगद का पेड़ बोला — "लोग अक्सर मेरी छॉह में ठंडे होने के लिये आते हैं और जब वे सुस्ता लेते हैं तो मेरी टहनियॉ तोड़ कर उनके पत्ते तोड़ कर बिखेर जाते हैं जिनकी छॉह में उन्होंने सुस्ताया

था। आदमी की जाति बहुत ही कृतघ्न है। चीते तुम उसे खा लो।"

यह सुन कर चीता तो उसे तुरन्त ही खा जाता पर ब्राह्मण बोला — "चीते तुम मुझे ऐसे अभी नहीं खा सकते क्योंकि तुमने वायदा किया कि तुम पहले छह फैसले सुनोगे।"

चीता बोला "ठीक है।" और वे और आगे चल दिये।

कुछ देर बाद उन्हें एक ऊँट मिला। उसको देखते ही ब्राह्मण चिल्लाया — "सर ऊँट जी सर ऊँट जी। तुम मेरी बात सुनो और अपना फैसला सुनाओ।"

ऊँट बोला — "मुझे किस बात पर फैसला देना है।"

ब्राह्मण बोला — "इस चीते ने कहा कि मुझे पानी पीना है मुझे इस कटघरे में से निकाल दो। इसने वायदा किया कि अगर मैंने इसे निकाल दिया तो यह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा। पर अब जब मैंने इसे निकाल दिया है तो यह मुझे खाना चाहता है। इसका मेरे साथ ऐसा करना क्या ठीक है?"

ऊँट बोला — "जब मैं जवान था और ताकतवर था तब मैं बहुत काम किया करता था तब मेरा मालिक मेरी बहुत अच्छी तरह से देखभाल करता था और मुझे बहुत अच्छा खाना खिलाता था।

पर अब जब मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मेरी ताकत चली गयी है तब वह मुझ पर और ज़्यादा बोझा लादता है और मुझे भूखा भी रखता है। बेरहमी से मारता भी है। यह आदमी की जाति बड़ी

बेरहम और अन्यायी है इसलिये चीते तुम आदमी को खा सकते हो।"

चीते ने एक बार फिर आदमी को खा लिया होता पर आदमी बोला — "इतनी जल्दी नहीं क्योंकि हमको छह फैसले सुनने हैं।"

सो वे फिर और आगे चले। कुछ दूर चलने के बाद उनको एक बैल दिखायी दिया जो सड़क के किनारे ही पड़ा हुआ था।

ब्राह्मण ने उससे भी कहा — "तुम मेरी बात सुनो और अपना फैसला सुनाओ।"

बैल बोला — "मुझे किस बात पर फैसला देना है।"

ब्राह्मण बोला — "इस चीते ने कहा कि मुझे पानी पीना है मुझे इस कटघरे में से निकाल दो। इसने वायदा किया कि अगर मैंने इसे निकाल दिया तो यह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा। पर अब जब मैंने इसे निकाल दिया है तो यह मुझे खाना चाहता है। इसका मेरे साथ ऐसा करना क्या ठीक है?"

बैल बोला — "जब मैं काम करने के लायक था तो मेरा मालिक मुझे बहुत अच्छी तरह से रखता था पर अब जब मैं बूढ़ा हो गया हूँ तब वह मेरे सारे किये कामों को बिल्कुल ही भूल गया है। वह मुझे यहाँ सड़क पर छोड़ गया है। चीते तुम आदमी को खा लो क्योंकि आदमी के मन में दया नहीं होती।"

अब तक तीन फैसले ब्राह्मण के खिलाफ जा चुके थे फिर भी ब्राह्मण ने आशा नहीं छोड़ी थी। उसने तीन और फैसले सुनने का फैसला कर लिया था। सो वे दोनों और आगे चले।

आगे चल कर उनको हवा में उड़ता हुआ एक गरुड़ मिला।

ब्राह्मण बोला — "गरुड़ गरुड़। तुम मेरी बात सुनो और अपना फैसला सुनाओ।"

गरुड़ बोला — "मुझे किस बात पर फैसला देना है।"

ब्राह्मण बोला — "इस चीते ने कहा कि मुझे पानी पीना है मुझे इस कटघरे में से निकाल दो। इसने वायदा किया कि अगर मैंने इसे निकाल दिया तो यह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा। पर अब जब मैंने इसे निकाल दिया है तो यह मुझे खाना चाहता है। इसका मेरे साथ ऐसा करना क्या ठीक है?"

गरुड़ बोला — "जब भी कोई आदमी मुझे देखता है तो मुझे मारने की कोशिश करता है। वे चट्टानों पर चढ़ जाते हैं और मेरे बच्चों को चुरा लेते हैं। चीते तुम आदमी को खा लो क्योंकि आदमी तो जमीन का एक अत्याचारी प्राणी है।"

अब तो चीते ने दहाड़ना शुरू कर दिया था। वह बोला — "सारे लोग तुम्हारे खिलाफ ही फैसला दे रहे हैं ब्राह्मण।"

पर ब्राह्मण ने उससे विनती की — "अभी पूरे छह नहीं हुए हैं। अभी कुछ देर और रुको। अभी दो और लोगों से पूछना बाकी है।" सो वे फिर आगे चले।

इस बार उनको एक एक मगर मिला। ब्राह्मण ने बड़ी आशा के साथ उससे भी अपना सवाल किया कि शायद उसको अपने जैसा जवाब मिल जाये — "मगर जी मगर जी। तुम मेरी बात सुनो और अपना फैसला सुनाओ।"

मगर बोला — "मुझे किस बात पर फैसला देना है।"

ब्राह्मण बोला — "इस चीते ने कहा कि मुझे पानी पीना है मुझे इस कटघरे में से निकाल दो। इसने वायदा किया कि अगर मैंने इसे निकाल दिया तो यह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा। पर अब जब मैंने इसे निकाल दिया है तो यह मुझे खाना चाहता है। इसका मेरे साथ ऐसा करना क्या ठीक है?"

मगर बोला — "जब भी मैं अपनी नाक पानी से बाहर निकालता हूँ तो लोग मुझे सताते हैं और मुझे मारने की कोशिश करते हैं। चीते तुम आदमी को खा सकते हो क्योंकि जब तक आदमी ज़िन्दा है तब तक हमें आराम नहीं है।"

यह सुन कर आदमी का दिल डूब गया था। पॉच लोग उसके खिलाफ बोल चुके थे बस अब आशा की एक छोटी सी किरन उसे दिखायी दे रही थी – छठा जज। उसने चीते से विनती की कि "बस एक जज और। और अगर उसने भी मेरे खिलाफ फैसला दिया तो मैं तुम्हारा।"

यह कह कर वे दोनों फिर आगे चले। आगे चल कर उन्हें कौन मिला? एक गीदड़। ब्राह्मण ने उसे भी अपनी कहानी सुनायी

और उसका फैसला माँगा — "गीदड़ मामा गीदड़ मामा बताओ क्या यह ठीक है?"

गीदड़ बोला — "ऐसे तो मैं कोई फैसला नहीं दे सकता जब तक मैं यह न देख लूँ कि जब यह झगड़ा शुरू हुआ तो तुम लोग किस तरह खड़े हुए थे। इसलिये पहले मुझे वह जगह दिखाओ जहाँ तुम लोग पहली बार मिले थे।"

सो ब्राह्मण और चीता गीदड़ को साथ ले कर अपनी उस जगह लौटे जहाँ वे पहली बार मिले थे। वहाँ पहुँच कर गीदड़ ने आदमी से पूछा — "अब मुझे तुम वह जगह बताओ जहाँ तुम खड़े थे?"

आदमी बोला — "वहाँ।"

गीदड़ बोला — "वहाँ कहाँ। मुझे वहाँ खड़े हो कर बताओ कि तुम कहाँ खड़े थे।" आदमी वहाँ जा कर खड़ा हो गया।

गीदड़ ने फिर पूछा — "और उस समय चीता कहाँ था?"

जवाब चीते ने दिया — "कटघरे में।"

गीदड़ बोला — "यह आप क्या कह रहे हैं चीते जी? आप और कटघरे में? और आप देख किस तरफ रहे थे?"

चीता बोला — "इस बात से तुम्हारा क्या मतलब है कि मैं किस तरफ देख रहा था। मैं कटघरे में खड़ा हुआ था बस।"

कह कर वह कटघरे में चढ़ गया और बोला "और मेरा सिर इस तरफ था।"

गीदड़ बोला — "यह तो ठीक है पर मैं बिना यह देखे कि कटघरे का दरवाजा उस समय बन्द था खुला सारा मामला ठीक से नहीं समझ पा रहा हूँ।"

ब्राह्मण बोला — "दरवाजा बन्द था और उसकी चटखनी लगी हुई थी।"

गीदड़ बोला — "तब दरवाजा बन्द करो और उसकी चटखनी लगाओ।"

जब ब्राह्मण ने यह कर दिया तब गीदड़ चिल्लाया — "ओ कृतघ्न चीते। जब इस भले ब्राह्मण ने तुम्हें खोला तो क्या इसलिये निकाला था कि बदले में तुम इसे खा जाओगे। अब तुम ज़िन्दगी भर यहीं रहो। अब तुम्हें यहाँ से कोई नहीं निकालेगा। और दोस्त ब्राह्मण अब आप जहाँ जा रहे हो जाइये मैं अपने रास्ते जा रहा हूँ।"

यह कह कर गीदड़ एक दिशा में भाग गया और ब्राह्मण अपने रास्ते चला गया।

13 बन्दर का न्याय[24]

आदमी और शेर जैसी यह लोक कथा अफ्रीका के इथियोपिया देश में कही सुनी जाती है। देखो वहॉ के बच्चे इस कथा को किस तरह से कहते सुनते हैं।

एक सॉप कहीं जा रहा था कि चलते चलते वह एक नदी के किनारे आया जिसको वह पार नहीं कर सका। सो वह नदी के किनारे ही बैठ गया। कि तभी उधर से एक आदमी गुजरा।

सॉप उससे बोला — "बाढ़ आने की वजह से में इस नदी को पार नहीं कर पा रहा हूॅ। मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो।"

आदमी ने पूछा — "मैं तुम्हारी सहायता कैसे कर सकता हूॅ।"

सॉप बोला — "मैं तुम्हारे सिर पर बैठ सकता हूॅ।"

आदमी बहुत ही दयालु था। वह राजी हो गया और उसने उसको अपने सिर पर बिठा लिया और उसको नदी पार करवा दी। नदी के उस पार पहुॅच कर वह बोला — "अब तुमने नदी पार कर ली अब तुम उतर जाओ।"

सॉप बोला — "अब तो बहुत देर हो चुकी ही। तुम ऐसा कैसे कह सकते हो।" उसको अपने ऊपर बहुत भरोसा था।

[24] The Monkey's Justice – A Gumuz folktale from Ethiopia. Taken from : http://ethiopianfolktales.com/en/benishangul-gumuz/83-the-monkeys-justice

सॉप फिर बोला — "अब मैं नीचे नहीं उतरूॅगा अब तो मैं तुम्हें खाऊॅगा।"

आदमी बोला — "मैंने जो भलाई तुम्हारे साथ की है क्या तुम मुझे उसका यह बदला दे रहे हो।"

"मैंने कह दिया न कि मैं नीचे नहीं उतरूॅगा।"

आदमी बोला — "तो चलो तो फिर जज के पास चलते हैं। एक आदमी जज के पास और एक जानवर जज के पास।"

पहले वे एक आदमी के पास गये। पहले आदमी ने दूसरे आदमी से कहा — "भाई मैंने इस आदमी की सहायता की है। मैं इसे अपने सिर पर बिठा कर नदी पार करा कर ले कर आया हूॅ पर नदी पार करने के बाद अब यह मेरे सिर से नीचे उतरता ही नहीं और कहता है कि "मैं तुझे खाऊॅगा।"

आदमी जज ने कहा — "क्योंकि यह काम तुमने अपनी मर्जी से किया है। तुमने उसको अपने सिर पर बैठने के लिये कहा तो तुम भुगतो। वह तुम्हारे सिर से नीचे क्यों उतरेगा। मेरा फैसला तो यही है।" वह सॉप से बहुत डरा हुआ था।

यह सुन कर आदमी बोला — "चलो किसी बड़े जज के पास चलते हैं। किसी जानवर के पास चलते हैं।"

सो वे इसके फैसले के लिये कई जानवरों के पास गये – बबून हयीना और आदमी लोग। वे सब सॉप से डरते थे सो सब लोगों ने यही जवाब दिया।

सबने एक ही बात कही — "अगर तुम उसको अपनी मर्जी से अपने सिर पर चढ़ा कर लाये हो तो तुम जानो। उसका अधिकार तो वहॉ बैठे रहने का बनता है। वह तुम्हें खा भी सकता है।"

आखीर में एक बन्दर आया और उनसे पूछा कि क्या बात है। आदमी ने उसको भी अपनी कहानी सुनायी तो बन्दर बोला — "ऐसा है क्या। ठीक है अपना फैसला सुनाने से पहले मैं ज़रा पेड़ पर चढ़ जाऊॅ। यही हमारे खानदान की रीति है।" कह कर वह पेड़ पर चढ़ गया।

फिर उसने नीचे इधर उधर देखा और बोला — "मैं फैसला ऐसे नहीं सुना सकता। तुम लोग एक साथ मत खड़े हो एक मेरे बॉये हाथ को खड़े हो और दूसरा मेरे दॉये हाथ को जैसे अदालत में लोग अपना मुकदमा लड़ते हैं तभी मैं फैसला ठीक से सुना सकता हूॅ।

यह सुन कर सॉप आदमी के सिर पर से उतर कर एक तरफ को खड़ा हो गया। उसने सोचा कि बन्दर शायद उससे डर रहा है।

बन्दर बोला —

क्या तुम्हारे हाथ में कोई डंडी नहीं है क्या तुम्हारे दिल में हिम्मत नहीं है
इसके लिये तुम कुछ करते क्यों नहीं

आदमी बोला — "यह तो मैंने सोचा ही नहीं। यह तो सबसे अच्छा फैसला है जो मैंने आज तक में शायद ही कभी सुना हो।"

यह कह कर उसने एक डंडी उठायी और सॉप को उससे पीट पीट कर मार दिया। उसके बाद से सॉपों ने जंगलों में रहना शुरू कर दिया।

14 आदमी और साँप[25]

अफ्रीका के इथियोपिया देश की एक और लोक कथा। पुराने समय में जंगली जानवर और घरेलू जानवर दोनों ही आदमी जैसे हुआ करते थे। दोनों ही एक ही भाषा में भी बातचीत किया करते थे। उनका एक लीडर हुआ करता था जिसको वे अपना सेक्रेटरी कहा करते थे।

उन दिनों एक लोमड़ा उनका सेक्रेटरी था। और यह लोमड़ा अपने घर में अकेला जानवरों से दूर रहा करता था। जब जानवरों में लड़ाई होती थी तो सब मिल कर इस सेक्रेटरी के पास जाते थे और यह सेक्रेटरी उनका फैसला कर दिया करता था।

एक दिन एक आदमी अकेला यात्रा पर निकला हुआ था। उन दिनों में आदमी भी जानवरों से बातें किया करते थे। सो जब वह जा रहा था तो उसे एक साँप मिला।

वह साँप उस समय कुछ परेशान सा पड़ा हुआ था। वह बेचारा हिल भी नहीं पा रहा था। पर आदमी तो मजबूत था। सो साँप ने आदमी से कहा — "तुम तो जहाँ चाहे जा सकते हो पर मैं मजबूर हूँ। मेहरबानी कर के मुझे अपने साथ ले चलो।"

[25] The Man and the Snake – A Gumuz folktale from Ethiopia. Taken from : http://ethiopianfolktales.com/en/benishangul-gumuz/86-the-man-and-the-snake

आदमी राजी हो गया और वह साँप को उठा कर चल दिया। काफी देर चलने के बाद आदमी ने साँप से कहा — "मैं अब थक गया हूँ। हम लोग बहुत दूर निकल आये हैं। अब तुम यहाँ उतर जाओ और मैं तुम्हें यहाँ छोड़े देता हूँ।

इस बात पर उनमें झगड़ा हो गया। साँप का कहना था कि वह उसे अभी और आगे ले चले आदमी का कहना यह था कि वह उसे काफी दूर तक ले आया है अब वह थक गया है सो उसको अब नीचे उतर जाना चाहिये।

जब साँप नहीं मान रहा था तो आदमी ने कुछ ज़ोर से गुस्से में भर कर कहा — "उतरो नीचे।"

साँप ने धमकी दी — "मैं नीचे भी नहीं उतरूँगा और मैं तुमको काटूँगा भी।"

कह कर उसने अपना चेहरा आदमी के चेहरे की तरफ घुमा लिया और अपनी जीभ बाहर निकाल निकाल कर उसको काटने की धमकी देने लगा। आदमी यह देख कर बहुत डर गया पर फिर भी उसने उसको अपने सिर पर ही रखा रहने दिया और आगे चलता रहा।

आदमी ने सोचा कि क्यों न किसी जज के पास चला जाये जो इस बात का फैसला कर दे कि यह मेरे ऊपर ही लदा रहेगा या फिर कभी नीचे भी उतरेगा। सो फिर वे लोग जंगली जानवरों के पास

गये। तो वहॉ जा कर सॉप ने एक एक कर के उन सबको भी धमकी दी कि वह उनको काट लेगा।

इस धमकी से वे सब डर गये। इसलिये उसने एक अच्छा जज ढूँढने की जो उसकी तरफ अपनी राय देने की हिम्मत करे कोशिश की पर उसे कोई नहीं मिल सका।

आखिर वे एक ऐसे जानवर के पास आये जिसको आदमी जानता भी नहीं था। वह था लोमड़ा। आदमी को मालूम नहीं था कि वह जानवरों का सरदार था। सॉप अभी भी उसके गले में पड़ा हुआ था।

लोमड़े ने उसे इस तरह आते देखा तो हॅसा और बोला — "यह तुमने क्या शक्ल बना रखी है।"

आदमी बोला — "मैं इसको यहॉ अपनी गर्दन के चारों तरफ लपेटे हुए ही लाया हूँ क्योंकि जब भी मैं इससे उतर जाने के लिये कहता हूँ तो यह उतरता नहीं है।"

लोमड़ा बोला — "यह मामला तो बहुत आसान है। मैं तुम्हारा फैसला अभी करता हूँ। पहले तुम लोग नीचे बैठ जाओ।"

जब वे दोनों बैठ गये तो लोमड़ा बोला — "इससे पहले कि मैं अपने कोई फैसला सुनाऊँ मैं इस आदमी से यह जानना चाहता हूँ। हॉ आदमी अब तुम मुझे ठीक ठीक बताना। यह सॉप तुम्हारी गर्दन के चारों तरफ कैसे और कबसे लिपटा हुआ है। और हॉ पहले ओ

सॉप तुम इसकी गर्दन से नीचे उतर जाओ तभी मैं कुछ बोल सकूँगा।"

सो सॉप आदमी की गर्दन से तुरन्त ही नीचे उतर गया और उसके बराबर में जा कर बैठ गया। जैसे ही सॉप आदमी के बराबर में जा कर बैठा लोमड़े ने आदमी से कहा "इसको डंडे से तुरन्त ही मार डालो।"

आदमी फुर्तीला था उसने तुरन्त ही अपने डडे से उस सॉप को वहीं का वहीं मार डाला।

आदमी इस तरह से अपने आपको सॉप से बचा देख कर लोमड़े से बोला — "मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूँ। आपने मेरी जान बचा ली। मुझे अपनी सेवा करने का कुछ मौका दीजिये। मैं आपके लिये अभी एक बकरा या भेड़ ले कर आता हूँ। मेहरबानी कर के आप कहीं जाइयेगा नहीं। मैं आ कर आपको यहीं ढूँढ लूँगा।"

लोमड़ा अपनी भेंट के बारे में सुन कर बहुत खुश था। उसने कहा कि वह आदमी का यहीं इन्तजार करेगा। वह जल्दी से जसके लिये भेंट ले आये।

आदमी चालाक था वह अपना वायदा निभाना नहीं चाहता था। सो वह वहॉ से चला तो गया पर जब वह लौट कर आया तो वह अपनी शम्मा[26] में

[26] Schamma is the Ethiopian traditional dress which is worn by male and female. It normally white kind of thin cloth embroidered on both of its width sides. See its picture above.

बजाय किसी भेड़ या बकरे के वह एक बड़ा सा कुत्ता छिपा कर ले आया।

जब वह वहॉ आया तो कुत्ते को उसने लोमड़े के ऊपर बिठा दिया। अब कुत्ता तो लोमड़े का दुश्मन होता है सो लोमड़े के ऊपर बैठते ही उसने लोमड़े के गले में काट लिया और उसे मार दिया।

मरते मरते लोमड़ा बोला — "ओह यह आदमी भी कितना नीच है कि जिसने इसकी जान बचायी इसने उसी को मार दिया।"

15 बन्दर और अनन्सी मकड़ा[27]

यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के जमैका देश में कही सुनी जाती है।

एक बार एक बन्दर और अनन्सी[28] बहुत अच्छे दोस्त थे। एक बार वे एक साथ कहीं जा रहे थे कि चलते चलते उनको एक चीता एक गहरे गड्ढे में गिरा मिला।

तो अनन्सी ने कहा — "ब्रैर[29] बन्दर। तुम्हारे पास तो एक पूँछ है। तुम अगर अपनी पूँछ इस गड्ढे के अन्दर डालोगे तो तुम चीते की सहायता कर सकते हो।"

सो बन्दर ने अपनी पूँछ उस गड्ढे में डाल दी जिसमें चीता गिरा हुआ था। इतनी देर में अनन्सी एक पेड़ पर चढ़ गया। उधर बन्दर की पूँछ पकड़ कर चीता गड्ढे के बाहर निकल आया।

बाहर निकल कर चीता बोला — "ब्रैर बन्दर, मुझे बहुत भूख लगी है मैं अब तुमको खाऊँगा।" यह सुन कर बन्दर बहुत आश्चर्य

---

[27] The Monkey and Anansi Spider – a tale from Jamaica, Norh America. Told by Samuel Christie. Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/jas/jas012.htm
In the book "Jamaica Anansi Stories" by Martha Warren Beckwith, 1924.

[28] Anansi Spider is a very important hero of Western African countries, especially of Ghana, but when the people were taken to other parts of the world as slaves his stories aslo went there with them and then mixed with their culture. There are four books available with the title "Anansi Makade Ke Karname-1", "-2", "-3" and "-4", all written by Sushma Gupta in Hindi. They are available from hindifalktales@gmail.com

[29] Brer word is used to denote "brother".

में पड़ गया कि मैंने तो इसको गड्ढे में से निकाला है और अब यह मुझे खाना चाहता है।

पर यह सुन कर पेड़ पर चढ़ा हुआ अनन्सी बहुत ज़ोर से हॅसा। बन्दर बहुत परेशान था कि वह अब क्या करे। यह चीता तो उसको खा जायेगा।

सो अनन्सी ने चीते से कहा — "ब्रैर चीते, तुमने तो अब बन्दर को पकड़ लिया क्या तुम अब उसे खाओगे?"

चीता बोला — "हॉ मैं अब उसे खाऊॅगा।"

अनन्सी बोला — "तो ऐसा करो जैसे मैं कर रहा हूॅ। तुम अपने दोनों हाथ खोल कर ज़ोर से खुशी से तालियॉ बजाओ और गाओ "मैंने बन्दर को पकड़ लिया, आहा मैंने बन्दर को पकड़ लिया।"

इतना कह कर अनन्सी ने ज़ोर ज़ोर से तालियॉ बजानी शुरू कर दी। चीते को यह विचार अच्छा लगा।

उसने बन्दर की पूॅछ छोड़ दी और अनन्सी के कहे अनुसार अनन्सी की तरह से अपने दोनों हाथों से ज़ोर ज़ोर से तालियॉ बजा बजा कर गाने लगा "मैंने बन्दर को पकड़ लिया, आहा मैंने बन्दर को पकड़ लिया।"

इससे बन्दर आजाद हो गया और वहॉ से भाग गया। चीता बन्दर के पीछे भागा पर बन्दर तो भाग कर एक पेड़ पर चढ़ गया।

उधर अनन्सी भी पेड़ से नीचे उतर कर अपने घर चला गया। इस तरह दोनों की जान बच गयी।

15 चीते की गुरू[30]

शेर और आदमी जैसी यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के चीन देश में कही सुनी जाती है। इस लोक कथा में चीता जिससे शिकार करना सीखता है वह उसी को ही खा जाना चाहता है।

चीता एक बहुत ही मजबूत जानवर था। वह बहुत तेज़ भागता था, वह बहुत ज़ोर से बोलता था पर बस शानदार तरीके से चल नहीं पाता था। अपनी ताकत और तेज़ भागने के बाद भी वह छोटे छोटे शिकार भी नहीं पकड़ पाता था।

हर रोज चीता शिकार के लिये अपने घर से निकलता पर अक्सर बहुत सारी रातों को वह बिना शिकार लिये ही घर वापस आ जाता और इस तरह वह बेचारा भूखा ही सो जाता।

एक दिन एक सुबह वह शिकार पर गया तो उसने एक बिल्ली को एक चूहे का पीछा करते और उसको पकड़ते देखा।

बिल्ली बहुत तेज़ थी और शानदार थी। वह बहुत ही शान से और शान्ति से चल रही थी और उसने अपना शिकार बहुत ही आसानी से पकड़ लिया था।

---

[30] The Tiger's Teacher – a folktale from China, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=224
Retold and written by Mike Lockett
[My Note: This story can be traced back to the stories – "Cat Teaches All Tricks Except One" and "Why Tiger Lacks Some Qualities of Cats"

चीते ने सोचा — "काश वह भी इतनी ही शानदार तरीके से चल पाता और अपना शिकार पकड़ पाता।" सो उसने यह सब बिल्ली से सीखने का इरादा किया।

वह उस बिल्ली के पास गया और बोला — "बिल्ली बहिन, क्या तुम मुझे इसी तरह से शानदार तरीके से चलना सिखाओगी जैसे तुम चलती हो, और क्या तुम मुझे इसी तरह से शिकार करना भी सिखाओगी जैसे तुम करती हो?"

बिल्ली बोली — "पर मुझे यह कैसे यकीन हो कि जो तरीके मैं तुम्हें सिखाऊँगी वह तुम अपने खाने के लिये मेरा ही शिकार करने के लिये इस्तेमाल नहीं करोगे?"

चीता बोला — "क्या तुम सोचती हो कि मैं अपने ही परिवार[31] के लोगों को नुकसान पहुँचाऊँगा, मैं उसको कैसे नुकसान पहुँचा सकता हूँ जो मेरा रिश्तेदार हो।

अगर तुम मेरी सहायता करोगी तो मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। मैं तो किसी और को भी तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचाने दूँगा।"

चीते ने उससे प्रार्थना की — "तुम मेरी गुरू बन जाओ। और फिर अगर मैं तुम्हारे सिर के एक बाल को भी कोई नुकसान पहुँचाऊँ तो मैं जंगल के सारे जानवरों की बद्दुआ लूँ।"

उसने बिल्ली के सामने यह दिखाने की अपनी पूरी पूरी कोशिश की कि वह उससे सच बोल रहा था। आखिर बिल्ली ने उसकी बातों

[31] Cheeta, tiger, lion and cat are all counted in the family of cat.

का विश्वास कर लिया और उसकी सहायता करने पर राजी हो गयी।

बिल्ली ने उसको शरीर को तोड़ने मरोड़ने[32] का अभ्यास कराया, उसको बिना आवाज किये चुपचाप चलना सिखाया। बिल्ली एक बहुत ही अच्छी गुरू थी। उसने चीते को शिकार करने की बहुत सारी चालें सिखायीं।

उसने चीते को जो कुछ भी वह जानती थी वह सभी कुछ सिखाने की पूरी पूरी कोशिश की, सिवाय एक होशियारी के – और वह थी पेड़ पर चढ़ने की कला।

उधर चीता भी एक अच्छा विद्यार्थी था। उसने भी जो कुछ बिल्ली ने उसको सिखाया सब कुछ बहुत अच्छे तरीके से सीखा। बहुत जल्दी ही वह सब कुछ सीख गया और ताकतवर हो गया, तेज़ भी हो गया और अपनी चाल में भी बहुत शान्त हो गया।

अब वह एक बड़े शिकारी की तरह शिकार करने के लिये तैयार था। अब वह खाने के लिये तैयार था। उसने बिल्ली की तरफ देखा तो बिल्ली देखने में उसको बहुत ही स्वादिष्ट लगी।

बिल्ली ने भी चीते की तरफ देखा तो चीता मुस्कुराया और उसने उसको अपने दॉत दिखाये। बिल्ली को देख कर चीते के मुॅह में पानी आ रहा था और वह उसके मुॅह के एक तरफ से बाहर भी बह रहा था।

[32] Translated for the word “Gymnastics”

बिल्ली जान गयी कि चीते के ऊपर अब विश्वास नहीं किया जा सकता था।

वह बोली — "अब तुम्हारे सब सबक खत्म हो गये हैं। मैंने तुमको जो कुछ भी मैं सिखा सकती थी सब कुछ सिखा दिया है।"

चीता बोला — "क्या तुमको पूरा यकीन है कि तुमने मुझे वह सब कुछ सिखा दिया जो कुछ तुम जानती थी, ओ मेरी गुरू? क्या अब तुम्हारे पास मुझे सिखाने के लिये कुछ भी नहीं बचा?"

जैसे जैसे चीता यह सब उस बिल्ली से कह रहा था उसके पंजे आगे बढ़ रहे थे। तुरन्त ही चीते ने अपना मुँह खोला और हवा में कूद गया। ओह, चीता तो बहुत तेज़ था।

बिल्ली को भागने का समय ही नहीं मिला। पर वह भागने की बजाय पास वाले पेड़ पर चढ़ गयी। वह उस पेड़ पर जितनी ऊँची चढ़ सकती थी चढ़ती चली गयी।

बिल्ली ने सोचा — "यह तो बहुत ही अच्छा हुआ कि मैंने चीते को पेड़ पर चढ़ना नहीं सिखाया वरना मैं तो आज गयी थी।"

चीता बहुत कूदा, बहुत गुर्राया, उसने पेड़ पर चढ़ने के लिये पेड़ की छाल पर अपने पंजे भी मारे, उसने बिल्ली की सिखायी हर चाल आजमायी – पर वह पेड़ पर न चढ़ सका।

बिल्ली भी एक शाख से दूसरी शाख पर और फिर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर भागती चली गयी जब तक कि उसने चीते को बहुत पीछे नहीं छोड़ दिया।

चीता बहुत शर्मिन्दा हुआ। जो कुछ उसका गुरू उसको सबसे अच्छा सिखा सकता था उसको सीखने के रास्ते में उसकी भूख और लालच आ गया था इसी लिये वह उससे सब कुछ नहीं सीख सका और अपना पहला शिकार भी खो बैठा।

इस कहानी से हमको दो सीख मिलती हैं। पहली यह कि विद्यार्थी को अपने सीखने के रास्ते में किसी भी चीज़ को नहीं लाना चाहिये वरना उसकी पढ़ाई अधूरी रह जाती है।

और दूसरी यह कि किसी को कुछ भी सिखाते समय अपने बचाव का तरीका अपने पास जरूर रखना चाहिये ताकि अपनी सुरक्षा अपने आप की जा सके।

17 चूहे ने बन्दर की पूँछ बचायी[33]

यह कहानी ठीक "शेर और आदमी" जैसी तो नहीं है क्योंकि इसमें कोई आदमी नहीं है पर है यह बिल्कुल वैसे ही सिवाय इसके कि इसमें केवल जानवर। औ देखते हैं ऐसा कैसे होता है। यह कहानी हमने इथियोपिया की लोक कथाओं से ली है।

एक जंगल में एक हयीना[34] रहता था। जंगल का कोई भी जानवर उसको नहीं चाहता था क्योंकि वह एक बहुत ही बेरहम जानवर था।

एक दिन जब वह खाने की तलाश में इधर उधर घूम रहा था तो वह शिकारी के बनाये हुए एक गड्ढे में गिर पड़ा। गड्ढा गहरा था सो वह ऊपर तक कूद कर भी नहीं आ सका और उसी गड्ढे में पड़ा रह गया।

उधर से बहुत सारे जानवर निकले परन्तु उन्होंने उसको जान बूझ कर देख कर भी अनदेखा कर दिया सो वह वहीं का वहीं पड़ा रहा।

इत्तफाक से वहाँ से एक बन्दर गुजरा। वह बन्दर किसी दूसरे जंगल का था और उस हयीना को नहीं जानता था। उसने हयीना

---

[33] A Rat Saved the Tail of a Monkey – a folktale of Jablawi Tribe of Ethiopia, East Africa

[34] Hyena is a tiger like animal. See its picture above.

को देखा तो ऊपर से ही चिल्लाया — "अरे हयीना भाई, तुम यहाँ कैसे?"

हयीना बोला — "क्या बताऊँ बन्दर भाई, मैं इधर खाने की तलाश में निकला था पर इन बदमाश शिकारियों के बनाए इस गड्ढे में गिर पड़ा। मेरी जान बचाओ, तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी।"

बन्दर बोला — "तुम कोई खराब किस्म के जानवर लगते हो क्योंकि इधर से जाने कितने आदमी और जानवर गुजरे होंगे पर तुमको किसी ने बचाया नहीं?"

हयीना बोला — "पता नहीं, पर क्या तुमने मुझे कोई खराब काम करते देखा है? और जहाँ तक मेरे अच्छे कामों का सवाल है वह तो तुम आगे आने वाले समय में ही देख पाओगे।" और वह फिर बन्दर से अपने आप को गड्ढे में से निकालने की प्रार्थना करने लगा।

काफी ना नुकुर के बाद बन्दर उसकी सहायता करने के लिए राजी हो गया पर वह बोला — "पर मैं तुम जितने बड़े जानवर को निकालूँगा कैसे, मैं तो बहुत छोटा सा हूँ?"

हयीना बोला — "तुम्हारे लिए तो यह बहुत आसान है। तुम अपनी पूँछ इस गड्ढे में लटका दो और मैं उसको पकड़ कर ऊपर तक चढ़ आऊँगा।"

बन्दर ने वैसा ही किया और हयीना उसकी पूँछ पकड़ कर ऊपर आ गया। ऊपर आ कर हयीना ने बन्दर को बहुत धन्यवाद दिया और उसके इस काम के लिए अपनी कृतज्ञता प्रगट की।

पर अचानक ही फिर वह बात बदल कर बोला — "बन्दर भाई, मुझे तुम्हारी यह पूँछ बहुत पसन्द आयी। तुम अपनी यह पूँछ मुझे दे दो।"

बन्दर ने तो यह सपने में भी नहीं सोचा था कि कोई उसकी पूँछ भी मॉग सकता है सो वह कुछ नाराजगी से बोला — "देखो न, मैं न कहता था कि तुम मुझे कोई खराब जानवर लगते हो तभी तो मेरे भलाई करने के बाद तुम अब मेरे शरीर का यह हिस्सा मॉग रहे हो।"

पर हयीना को तो बन्दर की पूँछ बहुत पसन्द आ गयी थी इसलिए उसकी समझ में बन्दर की कोई बात नहीं आ रही थी और इसी वजह से वह बन्दर से उसकी पूँछ देने के लिये जिद करता रहा।

उसने तो बन्दर से यहॉ तक भी कह दिया कि अगर उसने अपनी पूँछ उसे अपनी मर्जी से नहीं दी तो वह उसकी पूँछ जबरदस्ती ले लेगा।

यह सब सुन कर बन्दर तो बहुत ही परेशान हो गया। पर उसने धीरज से काम लिया और हयीना से कहा कि चलो किसी जज से फैसला कराते हैं। सो वे दोनों एक जज के पास पहुँचे।

और उनका जज कौन था? एक चूहा।

जब वे वहॉ पहुँचे तो चूहा बैठा हुआ काशीफल के बीज खा रहा था। उनकी बातें सुनने के बाद वह बोला कि वहॉ तो बहुत गरम हो रहा था सो चल कर किसी पेड़ की छाया में बैठा जाये।

सो वह उन दोनों को एक पेड़ की छाया में ले गया और अपने बिल के सामने जा कर बैठ गया।

उसने बन्दर से इशारे से कहा कि वह अपनी पूँछ को अपनी बगल में दबा ले और जब वह इशारा करे तो कूद कर पेड़ पर चढ़ जाए।

चूहे ने इशारा किया और अपना फैसला सुना दिया — "हयीना, तुम बन्दर की पूँछ नहीं ले सकते।" और यह कह कर वह अपने बिल में घुस गया।

हयीना लपक कर बन्दर की तरफ दौड़ा परन्तु बन्दर तो कब का कूद कर पेड़ पर चढ़ चुका था। हयीना बेचारा हाथ मलता हुआ घर वापस आ गया।

तो बच्चो इस तरह चूहे ने अपनी अक्लमन्दी से बन्दर की पूँछ बचायी।

List of Stories of “Lion and Man Like Stories”

1. Lion and Man
2. The Hunter and the Lion
3. The Gone Forever Tree
4. Naughty Tiger
5. The Tiger the Brahman and the Jackal
6. The Brahman the Crocodile and the Fox
7. The Man and the Snake
8. The White Man and the Snake
9. The Traveller's Adventure
10. The Man the Serpent and the Fox
11. The Ingrates
12. The Brahman, the Tiger and Six Judges
13. The Monkey's Justice
14. The Man and the Snake
15. Monkey and Anansi Spider
16. The Tiger's Teacher
17. A Rat Saved the Tail of a Monkey

Books in "One Story Many Colors" Series

1. Cat and Rat Like Stories (17 stories)
2. Bluebeard Like Stories (7 stories)
3. Tom Thumb Like Stories (12 stories)
4. Six Swans Like Stories
5. Three Oranges Like Stories (9 stories)
6. Snow White Like Stories
7. Sleeping Beauty Like Stories
8. Ping King Like Stories – 3 parts
9. Puss in Boots Like Storie (15 stories)
10. Hansel and Gratel Like Stories (4 stories)
11. Red Riding Hood Like Stories
12. Cinderella Like Stories in Europe (14+11 stories)
12. Cinderella in the World (21 stories)
13. Rumplestiltuskin Like Stories (22 stories)
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories (4 stories)
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Lion and Man Like Stories (14 stories)
17. Pome and Peel Like Stories (6 stories)
18. Soldier and Death Like Stories
19. Tees Maar Kahan Like Stories (11 stories)
20. Lion and Rabbit like Stories
21. Frog Princess Like Stories (7 stories)

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2021** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर, कैनेडा
2022